ગુજરાત રાજ્યના શિક્ષણવિભાગના પત્ર-ક્રમાંક
મશબ/1215/170-179/છ, તા. 23-3-2016 – થી મંજૂર

हिन्दी

(द्वितीय भाषा)

कक्षा 9

प्रतिज्ञापत्र

भारत मेरा देश है।
सभी भारतवासी मेरे भाई-बहन हैं।
मुझे अपने देश से प्यार है और इसकी समृद्धि तथा बहुविध
परम्परा पर गर्व है।
मैं हमेशा इसके योग्य बनने का प्रयत्न करता रहूँगा।
मैं अपने माता-पिता, अध्यापकों और सभी बड़ों की इज्जत करूँगा
एवं हरएक से नम्रतापूर्वक व्यवहार करूँगा।
मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अपने देश और देशवासियों के प्रति एकनिष्ठ रहूँगा।
उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है।

રાજ્ય સરકારની વિનામૂલ્યે યોજના હેઠળનું પુસ્તક

ગુજરાત રાજ્ય શાલા પાઠ્યપુસ્તક મંડલ
'વિદ્યાયન', સેક્ટર 10-એ, ગાંધીનગર-382 010

© गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, गांधीनगर

इस पाठ्यपुस्तक के सभी अधिकार गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के अधीन है । इस पाठ्यपुस्तक का कोई भी अंश किसी भी रूप में गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल के नियामक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता ।

विषय परामर्शन

डॉ. चन्द्रकान्त मेहता

लेखन-संपादन

डॉ. चंदुभाई स्वामी (कन्वीनर)
डॉ. गिरीशभाई त्रिवेदी
डॉ. जे.बी. जोशी
श्री महेशभाई उपाध्याय
डॉ. वर्षाबहन पारेख
डॉ. सविताबहन डामोर
श्री पुलकित जोशी
श्री प्रीतिबहन राठोड

समीक्षा

डॉ. रवीन्द्र अंधारिया
डॉ. नयना डेलीवाला
डॉ. गीता जगड
डॉ. लेखा स्वामी
डॉ. प्रेमसिंह क्षत्रिय
श्री वीरेन्द्रगिरि गोंसाई
श्री पंकज मारु

संयोजन

डॉ. कमलेश एन. परमार
(विषय-संयोजक : हिन्दी)

निर्माण-संयोजन

श्री हरेन शाह
(नायब नियामक : शैक्षणिक)

मुद्रण-आयोजन

श्री हरेश एस. लीम्बाचीया
(नायब नियामक : उत्पादन)

प्रस्तावना

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार किए गये नये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के अनुसंधान में गुजरात माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड द्वारा नया पाठ्यक्रम तैयार किया गया है, जिसे गुजरात सरकार ने स्वीकृति दी है।

नये राष्ट्रीय अभ्यासक्रम के परिपेक्ष में तैयार किए गए विभिन्न विषयों के नये अभ्यासक्रम के अनुसार तैयार की गई **कक्षा 9, हिन्दी (द्वितीय भाषा)** की यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मंडल हर्ष का अनुभव कर रहा है। नये पाठ्यपुस्तक के हस्तप्रत निर्माण की प्रक्रिया में संपादकीय पेनल ने विशेष ख्याल रखते हुए तैयार की है । एन.सी.ई.आर.टी. एवं अन्य राज्यों के अभ्यासक्रम, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को देखते हुए गुजरात के नये पाठ्यपुस्तक को गुणवत्तालक्षी कैसे बनाया जाय, उस पर संपादकीय पेनल ने सराहनीय प्रयत्न किया है ।

इस पाठ्यपुस्तक को प्रकशित करने से पहले इसी विशेषज्ञों एवं इस स्तर पर अध्यापनरत अध्यापकों ध्वारा सवाँगीण समीक्षा की गई है। समीक्षा शिबिर में मिले सुझावों को इस पाठ्यपुस्तक में शामिल किया गया है। पाठ्यपुस्तक की मंजूरी क्रमांक प्राप्त करने की प्रक्रिया के दौरान गुजरात माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शिक्षण बोर्ड के द्वारा प्राप्त हुए सुझावों के अनुसार इस पाठ्यपुस्तक में आवश्यक सुधार करके प्रसिद्ध किया गया है।

भाषाकीय नये अभ्यासक्रम का एक उदेश्य यह है, कि इस स्तर के छात्र व्यवहारिक भाषा का उपयोग करने के साथ-साथ अपनी भाषा-अभिव्यक्ति को विशेष प्रभावशाली बनाएँ। साहित्यिक स्वरूप एवं सर्जनात्मक भाषा का परिचय के साथ-साथ हिन्दी भाषा की खुबियों को समझकर अपने स्व-लेखन में प्रयोग करना सिखें, इस लिए स्व-लेखन के लिए छात्रों को पूर्ण अवकाश दिया गया है।

इस पाठ्यपुस्तक को रूचिकर, उपयोगी एवं क्षतिरहित बनाने का पूरा प्रयास मंडल द्वारा किया गया है, फिर भी पुस्तक की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए शिक्षा में रुचि रखनेवालों से प्राप्त सुझावों का मंडल स्वागत करता है ।

पी. भारती (IAS)
नियामक
दिनांक : 04-11-2019

कार्यवाहक प्रमुख
गांधीनगर

प्रथम संस्करण : 2016, पुनःमुद्रण : 2017, 2018, 2019, 2020

प्रकाशक : गुजरात राज्य शाला पाठ्यपुस्तक मंडल, 'विद्यायन', सेक्टर 10-ए, गांधीनगर की ओर से पी. भारती, नियामक

मुद्रक :

मूलभूत कर्तव्य

भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह – *

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे ;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करनेवाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे ;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे ;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो ; ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध हैं ;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्त्व संझे और उसका परिरक्षण करे ;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दया भाव रखे ;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे ;

(झ) सार्वजनिक सम्पति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे ;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के क्षेत्रों में उत्कर्ष की और बढ़ने का सतत प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू ले ;

(ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, बालक या प्रतिपाल्य के लिए यथास्थिति शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

---

* भारत का संविधान : अनुच्छेद 51-क

अनुक्रमणिका

1.	आराधना	(काव्य)	वसंत बापट	1
2.	न्यायमंत्री	(कहानी)	श्री सुदर्शन	3
3.	क्या निराश हुआ जाए	(निबंध)	हजारीप्रसाद द्विवेदी	7
●	मुहावरें			11
4.	कर्ण का जीवनदर्शन	(खंडकाव्य)	रामधारीसिंह दिनकर	12
5.	स्वराज्य की नींव	(एकांकी)	विष्णु प्रभाकर	15
●	अशुद्ध और शुद्ध वाक्य			20
6.	मेरी बीमारी श्यामा ने ली	(आत्मकथा अंश)	हरिवंशराय बच्चन	25
7.	सूरदास के पद	(पद)	सूरदास	29
8.	गुलमर्ग की खिड़की से एक रात	(यात्रा वर्णन)	मोहन राकेश	31
9.	निर्भय बनो	(उपन्यास अंश)	फणीश्वरनाथ रेणु	34
●	कहावतें			38
10.	भारत गौरव	(काव्य)	मैथिलीशरण गुप्त	41
11.	एक यात्रा यह भी	(कहानी)	रामदरश मिश्र	44
12.	रानी	(रेखाचित्र)	महादेवी वर्मा	49
●	वर्तनी			53
13.	नीति के दोहे	(दोहे)	रहीम	60
14.	युग और मैं	(काव्य)	नरेन्द्र शर्मा	62
15.	दाज्यू	(कहानी)	शेखर जोशी	65
16.	भारतीय संस्कृति में गुरुशिष्य संबंध	(निबंध)	आनंदशंकर माधवन	69
●	शब्द-संरचना			72
17.	तुलसी के पद	(पद)	तुलसीदास	81
18.	अंधेरी नगरी	(एकांकी)	भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	84
19.	महाकवि कालिदास	(जीवनी)	नरपत बारहठ हडवैचा	89
●	वाक्य तथा वाक्य के प्रकार			93
20.	धरती की शान	(गीत)	पंडित भरत व्यास	99
21.	क्रांतिकारी शेखर का बचपन	(उपन्यास अंश)	सच्चिदानंद हीरानंद वाल्स्यायन - 'अज्ञेय'	102
●	स्वर संधि			105
22.	वीरों का कैसा हो वसंत	(गीत)	सुभद्राकुमारी चौहान	111
23.	जब मैंने पहली पुस्तक खरीदी	(संस्मरण)	धर्मवीर भारती	113
●	समास			116
24.	दोहे	(दोहे)	कबीर	122

पूरक-वाचन

1.	विमान से छलांग	(पत्र)	श्यामचन्द्र कपूर	125
2.	राष्ट्र का स्वरूप	(निबंध)	वासुदेवशरण अग्रवाल	127
3.	कुण्डिलयाँ	(कविता)	गिरिधर	130
4.	महान भारतीय वैज्ञानिक : विक्रम साराभाई	(लेख)	पी.सी. पटेल	131

●

1 आराधना

वसंत बापट

(जन्म : सन् 1922, निधन : 2002 ई.)

श्री वसंत बापट ख्यातनाम कवि हैं, आपका जन्म महाराष्ट्र के सतारा जिले के कराड नामक गाँव में हुआ था । पूणे आपकी कर्मभूमि है । राष्ट्रसेवादल में आप अग्रणी रहे हैं । व्यवसाय से प्राध्यापक रहे। आपके काव्यों में राष्ट्रभक्ति, समाज जागरण एवं मानवीय संवेदनाएँ व्यक्त हुई हैं । सेतु, बिजली, सकीना, अकरावी (ग्यारहवीं) दिशा, तेजसी आपकी रचनाएँ हैं।

प्रस्तुत प्रार्थना मे 'सत्यं शिवं सुंदरम्' की भावना के साथ दीन-दुखियों की रक्षा करना, मानवता की उपासना करना, भेदभावों को दूर करना, बैरभाव से मुक्त हो कर विश्वबन्धुत्व की स्थापना करना- जैसे वैश्विक मूल्यों को हस्तान्तरण करने की प्रेरणा देनेवाली यह प्रार्थना मराठी से अनुदित है ।

देहमंदिर, चित्तमंदिर एक ही है प्रार्थना।
सत्य-सुंदर मांगल्य की नित्य हो आराधना॥

दुखियारों का दु:ख जाए, है यही मनकामना।
वेदना को परख पाने जगाएँ संवेदना॥
दुर्बलों के रक्षणार्थ पौरुष की साधना॥

जीवन में नवतेज हो, अंतरंग में भावना।
सुंदरता की आस हो मानवता की हो उपासना॥
शौर्य पावें, धैर्य पावें, यही है अभ्यर्थना॥

भेद सभी अस्त होवें, वैर और वासना॥
मानवों की एकता की पूर्ण हो कल्पना।
मुक्त हम, चाहें एक ही बंधुता की कामना॥

शब्दार्थ और टिप्पणी

प्रार्थना निवेदन करना, भक्ति एवं श्रद्धापूर्वक ईश्वर की माँगना **मांगल्य** मंगलकारी **नित्य** निरंतर, प्रतिदिन, हर-रोज **आराधना** पूजा **वेदना** कष्ट, व्यथा **परख** गुण-दोष को निश्चित करने की परीक्षा **संवेदना** अनुभूति, सहानुभूति **दुर्बल** कमज़ोर **साधना** उपासना, आराधना **अंतरंग** शरीर के भीतरी अंग (मन, मस्तक) **आस** आशा, भरोसा, सहारा, कामना **मानवता** मनुष्यता **आसना** आराधना, भक्ति **धैर्य** धीरता, धीरज, सब्र **अभ्यर्थना** अनुरोध, बिनती **अस्त** ओझल, अंत, नाश, समाप्त **बैर** दुश्मनी, शत्रुभाव **वासना** कामना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) कवि नित्य कैसी आराधना चाहते हैं ?
(2) कवि किसकी मनोकामना चाहते हैं ?
(3) कवि दुर्बलों के रक्षणार्थ किसकी साधना चाहते हैं ?
(4) कवि किसकी अभ्यर्थना करते हैं ?
(5) कवि कैसी बंधुता की कामना करते हैं ?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

(1) कवि कैसे मांगल्य की आराधना करते हैं?

(2) कवि के अनुसार किसके दु:ख दूर होने चाहिए?

(3) कवि की क्या अभ्यर्थना हैं?

(4) कवि भेदों को नाश करने की बात क्यों करते हैं?

3. निम्नलिखित काव्यपंक्तिओं का आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) देहमंदिर चित्तमंदिर एक ही है प्रार्थना।
सत्य सुंदर मांगल्य की नित्य हो आराधना॥

(2) भेद सभी अस्त होने बैर और वासना
मानवों की एकता की पूर्ण हो कल्पना
मुक्त हमें चाहे एक ही बंधुता की कल्पना॥

4. काव्यपंक्तिओं को पूर्ण कीजिए :

(1) देहमंदिर चित्तमंदिर एक ही.....
.....
पौरुष की साधना।।

(2) जीवन में नवतेज हो.....
.....
बंधुता की कामना॥

5. विरुद्धार्थी शब्द लिखिए।

(1) दु:ख (2) जीवन (3) सत्य (4) सुंदर (5) अस्त

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- पठित प्रार्थना गीत को कंठस्थ कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'आराधना' प्रार्थना गीत का समूहगान करवाइए।
  अन्य भाषाओं के प्रार्थना-गीतों का छात्रों से संकलन करवाइए।

●

2 न्यायमंत्री

श्री सुदर्शन

(जन्म : सन् 1896 ई. : निधन : सन् 1968 ई.)

'सुदर्शन'जी का मूल वास्तविक नाम बदरीनाथ शर्मा था । आपका जन्म 1896 ई. पंजाब राज्य के सियालकोट नामक स्थान में हुआ था । बचपन से ही आपने कहानियाँ लिखना प्रारंभ किया था ।

पुष्पलता, सुप्रभात, परिवर्तन, पनघट, नगीना आदि आपके सुप्रसिद्ध कहानीसंग्रह हैं। आपका एकमात्र उपन्यास है - भागवंती।

इस कहानी में सम्राट अशोक सर्वश्रेष्ठ न्यायमंत्री की खोज में था, शिशुपाल से मुलाकात होने पर उसकी योग्यता देखकर उसे न्यायमंत्री बनाया। न्याय न राजा देखता है न रंक। न्यायतंत्र पर विश्वास दिलाने के लिए यहाँ प्रयास किया है। नयी पीढ़ी के लिए इस प्रेरक कहानी द्वारा न्यायतंत्र की जिम्मेदारी का भी महत्त्व समझाया गया है।

संध्या का समय था। चारों ओर अंधकार फैल चुका था। ऐसे में किसी ने बाहर से घर का दरवाजा खटखटाया।

''कौन है?'' ब्राह्मण शिशुपाल ने थोड़ा सा दरवाज़ा खोलते हुए पूछा।

''एक परदेशी'' बाहर से आवाज़ आई- ''क्या मुझे रात काटने के लिए स्थान मिल जाएगा?''

जैसे ही शिशुपाल ने पूरा दरवाज़ा खोला, उनके सामने एक नवयुवक खड़ा था। उन्होंने मुस्कराकर कहा- ''यह मेरा सौभाग्य है। अतिथि के चरणों से यह घर पवित्र हो जाएगा। आइए पधारिए।''

अतिथि को लेकर शिशुपाल घर में गए और उनका आदर-सत्कार किया।

फिर दोनों उस समय की देश की अवस्था पर बातें करने लगे। शिशुपाल ने कहा- ''आजकल बड़ा अन्याय हो रहा है।'' परंतु परदेशी इस बात से सहमत न था। वह बोला- ''दोष निकालना तो सुगम है परंतु कुछ करके दिखाना कठिन है,'' शिशुपाल बोले- ''अवसर मिले तो दिखा दूँ कि न्याय किसे कहते हैं?''

''तो आप अवसर चाहते हैं?''

''हाँ, अवसर चाहता हूँ।''

''फिर कोई अन्याय नहीं होगा?''

''बिलकुल नहीं।''

''कोई अपराधी दंड से न बचेगा।''

''नहीं।''

परदेशी ने मुस्कराकर कहा- ''यह बहुत कठिन काम है।''

''ब्राह्मण के लिए कुछ भी कठिन नहीं। मैं न्याय का डंका बजाकर दिखा दूँगा।''

परदेशी धीरे से मुस्कराए, पर कुछ न बोले, फिर कुछ देर बाद वे सो गए।

सुबह उठकर परदेशी ने शिशुपाल को धन्यवाद देकर उनसे विदा ली।

कुछ दिनों बाद शिशुपाल के घर कुछ सिपाही आए और उन्हें दरबार में चलने के लिए कहा। शिशुपाल सहम गए। वे समझ नहीं सके कि सम्राट ने उन्हें क्यों बुलाया है। कहीं उस परदेशी ने तो सम्राट से झूठी-सच्ची शिकायत नहीं कर दी। दरबार में पहुँचकर शिशुपाल का कलेजा धड़कने लगा जब उन्होंने देखा कि परदेशी ही सम्राट अशोक हैं।

सम्राट बोले- ''ब्राह्मण देवता! मैं आपको न्याय का अवसर देना चाहता हूँ। आप तैयार हैं?''

पहले तो शिशुपाल घबराए, फिर बोले- ''यदि सम्राट की यही इच्छा है तो मैं तैयार हूँ।''

''बहुत ठीक, कल से आप न्यायमंत्री हुए'' सम्राट ने कहा और अपने हाथ से अँगूठी उतारकर शिशुपाल को पहना दी। यह सम्राट अशोक की राजमुद्रा थी।

अब शिशुपाल न्यायमंत्री थे। उन्होंने राज्य की समुचित व्यवस्था करना आरंभ कर दिया। उनके सुप्रबंध से राज्य में पूरी तरह शांति रहने लगी। किसी को किसी प्रकार का भय नहीं था, लोग दरवाज़े तक खुले छोड़ जाते थे। चारों तरफ़ न्यायमंत्री के सुप्रबंध और न्याय की धूम मच गई।

लगभग एक महीने बाद, किसी ने रात में एक पहरेदार की हत्या कर दी। सुबह होते ही यह बात चारों तरफ़ फैल गई। लोग बड़े हैरान थे। शिशुपाल की तो नींद ही उड़ गई। उन्होंने खाना-पीना छोड़कर अपराधी का पता लगाने में रात-दिन एक कर दिया।

बहुत प्रयत्न करने के बाद जब अपराधी का पता चला तो शिशुपाल के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। स्वयं सम्राट ने उस पहरेदार की हत्या की थी। सम्राट को अपराधी घोषित करना बहुत ही कठिन काम था। शिशुपाल करें भी तो क्या करें? एक ओर वे न्यायमंत्री थे और दूसरी ओर सम्राट के सेवक, परंतु न्याय की दृष्टि में सम्राट और साधारण व्यक्ति में कोई अंतर नहीं होता।

अगले दिन शिशुपाल दरबार में पहुँचे। सम्राट अशोक सिंहासन पर बैठे हुए थे। आते ही उन्होंने शिशुपाल से पूछा- ''अपराधी का पता चला?''

न्यायमंत्री ने साहसपूर्वक कहा- ''जी हाँ, चल गया।''

''तो फिर उसे उपस्थित करो।''

न्यायमंत्री कुछ रुके, फिर अपने उच्च अधिकारी को संकेत करते हुए बोले ''धनवीर! इन्हें गिरफ़्तार कर लो, मैं आज्ञा देता हूँ।''

संकेत सम्राट की ओर था।

दरबार में निस्तब्धता छा गई । सम्राट का चेहरा क्रोध से लाल हो गया । वे सिंहासन से खड़े हो गए और बोले- ''इतना साहस?''

न्यायमंत्री ने ऐसा भाव प्रकट किया जैसे कुछ सुना ही न हो । उन्होंने अपने शब्दों को फिर दुहराया- ''धनवीर! देखते क्या हो? अपराधी को गिरफ़्तार करो।

दूसरे ही क्षण सम्राट के हाथों में हथकड़ी पड़ गई ।

न्यायमंत्री ने कहा- ''अशोक! तुम पर पहरेदार की हत्या का आरोप लगाया जाता है, तुम इसका क्या उत्तर देते हो?'' सम्राट होंठ काटकर रह गए।

न्यायमंत्री ने फिर पूछा- ''तो तुम अपराध स्वीकार करते हो?'' हाँ, मैंने उसे मारा अवश्य है, पर उद्दंड था।'' सम्राट का उत्तर था । ''वह उद्दंड था या नहीं, तुमने एक राजकर्मचारी की हत्या की है। तुम अपराधी हो। तुम्हें मृत्युदंड दिया जाता है।'' न्यायमंत्री ने निर्णय दिया।

सभा में सन्नाटा छा गया। न्यायमंत्री का निर्णय सुन सम्राट ने सिर झुका लिया। वे तो स्वयं शिशुपाल की परीक्षा में सफल हो गए थे। सम्राट का हृदय ऐसे व्यक्ति को पाकर गद्‌गद हो रहा था।

तभी न्यायमंत्री का संकेत पाकर एक कर्मचारी सम्राट अशोक की सोने की मूर्ति लेकर उपस्थित हो गया। न्यायमंत्री ने खड़े होकर कहा- ''सज्जनो! यह सच है कि मैं न्यायमंत्री हूँ और यह भी सच है कि अपराधी को दंड मिलना चाहिए परंतु अपराधी और कोई नहीं स्वयं सम्राट हैं। शास्त्रों में राजा को ईश्वर का रूप माना गया है इसलिए उसे ईश्वर ही दंड दे सकता है। अतएव मैं आज्ञा देता हूँ कि सम्राट को चेतावनी देकर छोड़ दिया जाए और उनके स्थान पर इस सोने की मूर्ति को फाँसी पर लटका दिया जाए जिससे लोगों को शिक्षा मिले।''

न्यायमंत्री का न्याय सुनकर लोग जय-जयकार कर उठे। जब सब लोग चले गए तो शिशुपाल ने राजमुद्रा सम्राट अशोक के सामने रख दी और बोले- ''महाराज! यह राजमुद्रा वापस ले लें, मुझसे यह बोझ नहीं उठाया जाएगा।''

अशोक ने सम्मानभरी दृष्टि से उनकी ओर देखते हुए गद्‌गद कंठ से कहा- ''आपने मेरी आँखें खोल दी हैं। आपका साहस प्रशंसनीय है। यह बोझ आपके अतिरिक्त और कोई नहीं उठा सकता।'' न्यायमंत्री निरुत्तर हो गए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

सौभाग्य सद्‌नसीब **सुगम** सरल **अवसर** मौका **राजमुद्रा** राष्ट्र की निशानी **सुप्रबंध** सुव्यवस्था **उद्दंड** अविवेकी **नि:स्तब्धता** शांति

मुहावरें

सहम जाना - आश्चर्यचकित हो जाना । **कलेजा धड़कना** - चिंतित होना **धूम मच जाना** - प्रसिद्ध हो जाना। **रात-दिन एक करना** - कड़ी मेहनत करना। **होठ काटना** - आश्चर्य में पड़ना। **सिर झुकाना** - लज्जित होना। **गद्‌गद हो जाना** - भावविभोर हो जाना। **आँखें खोल देना** - सही परिस्थिति समजाना।

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए।

(1) शिशुपालने अपने घर का दरवाजा क्यों खोल दिया?

(2) शिशुपाल किस अवसर की तलाश में था?

(3) न्याय के विषय में शिशुपाल के क्या विचार थे?

(4) परदेशी कौन था ? उसने दूसरे दिन क्या किया ?

(5) सम्राट अशोक ने शिशुपाल को राजमुद्रा क्यों दी?

(6) राज्य में न्याय के विषय में परिस्थितियाँ कैसे बदल गई?

(7) पहरेदार की हत्या होने पर शिशुपाल की स्थिति कैसी हो गई?

(8) अपराधी का पता चलने पर शिशुपाल ने क्या किया ?

2. विस्तार से उत्तर दीजिए :

(1) सम्राट अशोक ने न्यायमंत्री की खोज कैसे की?

(2) सम्राट अशोक ने न्यायमंत्री का पद देने हुए शिशुपाल को क्या दिया?

(3) सम्राट अशोक क्यों गद्‌गद हो गए?

(4) न्यायमंत्री ने अपराधी सम्राट के जीवन की रक्षा किस प्रकार की?

(5) न्यायमंत्री निरुत्तर क्यों हो गए?

3. निम्नलिखित विधान कौन कहता है ? क्यों ?

(1) ''यह मेरा सौभाग्य है ।''

(2) ''दोष निकालना तो सुगम है परंतु कुछ कर दिखाना कठिन है।''

(3) ''ब्राह्मण के लिए कुछ भी कठिन नहीं । मैं न्याय का डंका बजाकर दिखा दूँगा।''

(4) तो तुम अपराध स्वीकार करते हो?

(5) महाराज! यह राजमुद्रा वापस ले लें, मुझसे यह बोझ नहीं उठाया जाएगा।

4. विरोधी शब्द दीजिए :

परदेशी, आदर, अपराधी, सुप्रबंध, गिरफ़्तार, स्वीकार

5. समानार्थी शब्द दीजिए :

अतिथि, सुगम, कठिन, हैरान, नि:स्तब्धता, निरुत्तर

6. सोचकर बताइए :

(1) अगर आप न्यायमंत्री होते तो क्या करते?

(2) सम्राट अशोक की आँखें किस कारण खुल गईं?

(3) शिशुपाल के साहस की सम्राट अशोक ने क्यों प्रशंसा की?

7. **न्यायमंत्री के रूप में शिशुपाल को घोषित करते हुए सम्राट अशोक ने राजमुद्रा दी इसका अर्थ है-**

(अ) मैं आपसे प्रसन्न हूँ।

(ब) आपके न्यायमंत्री होने की यह तनरुवाह है।

(क) यह मेरी ओर से पुरस्कार है।

(ड) यह तुम्हारे न्यायमंत्री होने की पहचान है।

योग्यता-विस्तार

- आपने प्रति अन्याय हुआ हो इस विषय में अपने विचार कक्षा में प्रस्तुत कीजिए ।

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- आपको कहीं पर अन्याय हुआ हो, उसका वर्णन करते हुए न्याय प्राप्ति के लिए क्या प्रयास किए? उसकी चर्चा करें या लिखित ग्रंथ तैयार करें।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- इस कहानी का नाट्य-रूपांतर करके प्रार्थना सभा या रंगमंच पर प्रस्तुत करवाइए।

●

3 क्या निराश हुआ जाए

हजारीप्रसाद द्विवेदी

(जन्म : सन् 1907 ई. : निधन : सन् 1979 ई.)

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी का जन्म बलिया (उ.प्र.) जिले के 'दूबे का छपरा' नामक गाँव में हुआ था। पारिवारिक परंपरा अनुसार संस्कृत का अध्ययन शुरू करके उन्होंने हिन्दू काशी विश्वविद्यालय से ज्योतिषाचार्य की परीक्षा उत्तीर्ण की। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ के आश्रम में 1940 ई.से. 1950 ई. तक हिन्दी भवन के निर्देशक रहे। तत्पश्चात् काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी एवं पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ में हिन्दी विभाग के प्रोफेसर तथा अध्यक्ष पद पर कार्य किया। भारत सरकार ने उन्हें 'पद्मभूषण' की उपाधि से सम्मानित किया।

हिन्दी साहित्य जगत में द्विवेदीजी एक निबंधकार, उपन्यासकार, समालोचक तथा शोधकर्ता इतिहासकार के रूप में प्रचलित हैं। 'अशोक के फूल', 'विचारप्रवाह', 'कुटज', 'कल्पलता' आदि निबंधसंग्रह; 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'पुनर्नवा', 'चारुचंद्रलेख', 'अनामदास का पोथा', उपन्यास तथा 'कबीर', 'सूरदास', 'हिन्दी साहित्य का आदिकाल', 'साहित्य सहचर', 'हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास' (हिन्दी साहित्य की भूमिका) आदि आलोचना तथा इतिहास ग्रंथ हैं।

प्रस्तुत निबंध में द्विवेदीजी ने यह समझाया है कि तत्कालीन भारतीय समाज में व्याप्त अनाचार केवल बाहरी स्तर पर है; वास्तव में आज भी लोगों में मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था कायम है। अपने जीवन में घटित कुछ घटनाओं के द्वारा बताया है कि हमें निराश नहीं होना चाहिए अपितु हमें जीवन के प्रति आस्थावान बने रहना चाहिए।

मेरा मन कभी-कभी बैठ जाता है। समाचार-पत्र में ठगी, डकैती, चोरी, तस्करी और भ्रष्टाचार के समाचार भरे रहते हैं। आरोप-प्रत्यारोप का कुछ ऐसा वातावरण बन गया है कि लगता है, देश में कोई ईमानदार आदमी ही नहीं रह गया है। हर व्यक्ति संदेह की दृष्टि से देखा जा रहा है। जो जितने ही ऊँचे पद हैं, उनमें उतने ही अधिक दोष दिखाए जाते हैं।

एक बहुत बड़े आदमी ने मुझसे एक बार कहा था कि इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता, जो कुछ भी करेगा, उसमें लोग दोष खोजने लगेंगे। उसके सारे गुण भुला दिए जाएँगे और दोषों को बढ़ा-चढ़ाकर दिखाया जाने लगेगा। दोष किसमें नहीं होते? यही कारण है कि हर आदमी दोषी अधिक दीख रहा है, गुणी कम या बिल्कुल ही नहीं। स्थिति अगर ऐसी है तो निश्चय ही चिन्ता का विषय है।

क्या यही भारतवर्ष है, जिसका सपना तिलक और गाँधी ने देखा था? रवीन्द्रनाथ ठाकुर और मदनमोहन मालवीय का महान् संस्कृत-सभ्य भारतवर्ष किसी अतीत के गह्वर में डूब गया? आर्य और द्रविड़, हिन्दू और मुसलमान, यूरोपीय और भारतीय आदर्शों की मिलनभूमि 'महामानव समुद्र' क्या सूख ही गया? मेरा मन कहता है, ऐसा हो नहीं सकता। हमारे महान मनीषियों के सपनों का भारत है और रहेगा।

यह सही है कि इन दिनों कुछ ऐसा माहौल बना है कि ईमानदारी से मेहनत करके जीविका चलानेवाले निरीह और भोले-भोले श्रमजीवी पिस रहे हैं और झूठ तथा फरेब का रोजगार करनेवाले फल-फूल रहे हैं। ईमानदार को मूर्खता का पर्याय समझा जाने लगा है, सच्चाई केवल भीरु और बेबस लोगों के हिस्से पड़ी है। ऐसी स्थिति में जीवन के महान मूल्यों के बारे में लोगों की आस्था ही हिलने लगी है।

परंतु ऊपर-ऊपर जो कुछ दिखाई दे रहा है, वह बहुत ही हाल की मनुष्यनिर्मित नीतियों की त्रुटियों की देन है। सदा मनुष्य-बुद्धि नई परिस्थितियों का सामना करने के लिए, नए सामाजिक विधि-निषेधों को बनाती है, उनके ठीक साबित न होने पर उन्हें बदलती है। नियम-कानून सबके लिए बनाए जाते हैं, पर सबके लिए कभी-कभी एक ही नियम सुखकर नहीं होते। सामाजिक कायदे-कानून कभी युग-युग से परीक्षित आदर्शों से टकराते है, इससे ऊपरी सतह आलोड़ित भी होती है, पहले भी हुआ है, आगे भी होगा। उसे देखकर हताश हो जाना ठीक नहीं है।

भारतवर्ष ने कभी भी भौतिक वस्तुओं के संग्रह को बहुत अधिक महत्त्व नहीं दिया है। उसकी दृष्टि से मनुष्य के भीतर जो महान आंतरिक तत्त्व स्थिर भाव से बैठा हुआ है, वही चरम और परम है। लोभ-मोह, काम-क्रोध आदि विकार मनुष्य में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहते है, पर उन्हें प्रधान शक्ति मान लेना और अपने मन

तथा बुद्धि को उन्हीं के इशारे पर छोड़ देना बहुत निकृष्ट आचरण है। भारतवर्ष ने कभी भी उन्हें उचित नहीं माना, उन्हें सदा संयम के बंधन से बाँधकर रखने का प्रयत्न किया है परंतु भूख की उपेक्षा नहीं की जा सकती, बीमार के लिए दवा की उपेक्षा नहीं की जा सकती, गुमराह को ठीक रास्ते पर ले जाने के उपायों की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

हुआ यह है कि इस देश के कोटि-कोटि दरिद्रजनों की हीन अवस्था को दूर करने के लिए ऐसे अनेक कायदे-कानून बनाए गए हैं, जो कृषि उद्योग, वाणिज्य, शिक्षा और स्वास्थ्य की स्थिति को अधिक उन्नत और सुचारु बनाने के लक्ष्य से प्रेरित हैं, परंतु जिन लोगों को इन कार्यों में लगना है, उनका मन हर समय पवित्र नहीं होता। प्रायः वे ही लक्ष्य को भूल जाते और अपनी ही सुख-सुविधा की ओर ज्यादा ध्यान देने लगते हैं।

व्यक्ति-चित्त सब समय आदर्शों द्वारा चालित नहीं होता। जितने बड़े पैमाने पर इन क्षेत्रों में मनुष्य की उन्नति के विधान बनाए गए, उतनी ही मात्रा में लोभ, मोह जैसे विकार भी विस्तृत होते गए। लक्ष्य की बात भूल गई। आदर्शों को मजाक का विषय बनाया गया और संयम को दकियानूसी मान लिया गया। परिणाम जो होना था, वह हो रहा है। यह कुछ थोड़े-से लोगों के बढ़ते हुए लोभ का नतीजा है, परंतु इससे भारतवर्ष के पुराने आदर्श और भी अधिक स्पष्ट रूप से महान् और उपयोगी दिखाई देने लगे हैं।

भारतवर्ष सदा कानून को धर्म के रूप में देखता आ रहा है। आज एकाएक कानून और धर्म में अंतर कर दिया गया है। धर्म को धोखा नहीं दिया जा सकता, कानून को दिया जा सकता है। यही कारण है कि लोग धर्मभीरु हैं, वे कानून की त्रुटियों से लाभ उठाने में संकोच नहीं करते।

इस बात के पर्याप्त प्रमाण खोजे जा सकते हैं कि समाज के ऊपरी वर्ग में चाहे जो भी होता रहा हो, भीतर-भीतर भारतवर्ष अब भी यह अनुभव कर रहा है कि धर्म कानून से बड़ी चीज है। अब भी सेवा, ईमानदारी, सच्चाई और आध्यात्मिकता के मूल्य बने हुए हैं। वे दब अवश्य गए हैं, लेकिन नष्ट नहीं हुए । आज भी वह मनुष्य से प्रेम करता है, महिलाओं का सम्मान करता है, झूठ और चोरी को गलत समझता है, दूसरे को पीड़ा पहुँचाने को पाप समझता है। हर आदमी अपने व्यक्तिगत जीवन में इस बात का अनुभव करता है। समाचार-पत्रों में जो भ्रष्टाचार के प्रति इतना आक्रोश है, वह यही साबित करता है कि हम ऐसी चीजों को गलत समझते हैं और समाज से उन तत्त्वों की प्रतिष्ठा कम करना चाहते हैं जो गलत तरीके से धन या मान संग्रह करते हैं।

दोषों का पर्दाफाश करना बुरी बात नहीं है। बुराई यह मालूम होती है कि किसी के आचरण के गलत पक्ष को उद्घाटित करते समय उसमें रस लिया जाता है और दोषोद्घाटन को एकमात्र कर्तव्य मान लिया जाता है। बुराई में रस लेना बुरी बात हैं, अच्छाई को उतना ही रस लेकर उजागर न करना और भी बुरी बात है। सैकड़ों घटनाएँ ऐसी घटती हैं, जिन्हें उजागर करने से लोक-चित्त में अच्छाई के प्रति अच्छी भावना जगती है।

एक बार रेलवे स्टेशन पर टिकट लेते हुए गलती से मैंने दस के बजाय सौ रुपए का नोट दिया और मैं जल्दी-जल्दी गाड़ी में आकर बैठ गया। थोड़ी देर में टिकट बाबू उन दिनों के सेकंड क्लास के डिब्बे में हर आदमी का चेहरा पहचानता हुआ उपस्थित हुआ। उसने मुझे पहचान लिया और बड़ी विनम्रता के साथ मेरे हाथ में नब्बे रुपए रख दिए और बोला, ''यह बहुत गलती हो गई थी। आपने भी नहीं देखा, मैंने भी नहीं देखा।'' उनके चेहरे पर विचित्र संतोष की गरिमा थी। मैं चकित रह गया।

कैसे कहूँ कि दुनिया में सच्चाई और ईमानदारी लुप्त हो गई हैं, वैसी अनेक अवांछित घटनाएँ भी हुई हैं, परंतु यह एक घटना ठगी और वंचना की अनेक घटनाओं से अधिक शक्तिशाली है।

एक बार मैं बस-यात्रा कर रहा था। मेरे साथ मेरी पत्नी ओर तीन बच्चे भी थे, बस में कुछ खराबी थी, रुक-रुक कर चलती थी। गंतव्य से कोई पाँच मील पहले ही एक निर्जन सुनसान स्थान में बस ने जवाब दे दिया। रात के कोई दस बजे होंगे। बस में यात्री घबरा गए। कंडक्टर ऊपर गया और एक साइकिल लेकर चलता बना। लोगों को संदेह हो गया कि हमें धोखा दिया जा रहा है।

बस में बैठे लोगों ने तरह-तरह की बातें शुरू कर दीं। किसी ने कहा, ''यहाँ डकैती होती है, दो दिन पहले इसी तरह एक बस को लूट लिया गया था।'' परिवार सहित अकेला मैं ही था। बच्चे पानी-पानी चिल्ला रहे थे। पानी का कहीं ठिकाना न था। ऊपर से आदमियों का डर समा गया था।

कुछ नौजवानों ने ड्राइवर को पकड़ कर मारने-पीटने का हिसाब बनाया। ड्राइवर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह बड़े कातर ढंग से मेरी ओर देखने लगा और बोला, ''हम लोग बस का कोई उपाय कर रहे हैं, बचाइए, ये लोग मारेंगे।'' डर तो मेरे मन में भी था, पर उसकी कातर मुद्रा देखकर मैंने यात्रियों को समझाया कि मारना ठीक नहीं है, परंतु यात्री इतने घबरा गए कि वे मेरी बात सुनने को तैयार नहीं हुए। कहने लगे, ''इसकी बातों में मत आइए, धोखा दे रहा है। कंडक्टर को पहले ही डाकुओं के यहाँ भेज दिया है।''

मैं भी बहुत भयभीत था, पर ड्राइवर को किसी तरह मार-पीट से बचाया। डेढ़-दो घंटे बीत गए। मेरे बच्चे भोजन और पानी के लिए व्याकुल थे। मेरी और मेरी पत्नी की हालत बुरी थी। लोगों ने ड्राइवर को मारा तो नहीं, पर उसे बस से उतार कर एक जगह घेर कर रखा। कोई भी दुर्घटना होती है, तो पहले ड्राइवर को समाप्त कर देना उन्हें उचित जान पड़ा। ये गिड़गिड़ाने का कोई विशेष असर नहीं पड़ा। इसी समय क्या देखता हूँ कि एक खाली बस चली आ रही है और उस पर हमारा बस कंडक्टर भी बैठा हुआ है। उसने आते ही कहा, अड्डे से नई बस लाया हूँ, इस पर बैठिए। वह बस चलाने लायक नहीं है।'' फिर मेरे पास एक लोटे में पानी और थोड़ा दूध लेकर आया और बोला, ''पंडितजी ! बच्चों का रोना मुझसे देखा नहीं गया। वहीं दूध मिल गया, थोड़ा लेता आया।'' यात्रियों में फिर जान आई। सबने उसे धन्यवाद दिया। ड्राइवर से माफी माँगी और बारह बजे से पहले ही सब लोग बस अड्डे पहुँच गए।

कैसे कहूँ कि मनुष्यता एकदम समाप्त हो गई! कैसे कहूँ कि लोगों में दया-माया रह ही नहीं गई! जीवन में न जाने कितनी ऐसी घटनाएँ हुई हैं, जिन्हें मैं भूल नहीं सकता।

ठगा भी गया हूँ, धोखा भी खाया है, परंतु बहुत कम स्थलों पर विश्वासघात नाम की चीज मिलती है। केवल उन्हीं बातों का हिसाब रखो, जिनमें धोखा खाया है, तो जीवन कष्टकर हो जाएगा, परंतु ऐसी घटनाएँ भी बहुत कम नहीं हैं जब लोगों ने अकारण सहायता की है, निराश मन को ढाढ़स दिया है और हिम्मत बँधाई है। कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने अपने एक प्रार्थना गीत में भगवान से प्रार्थना की थी कि संसार में केवल नुकसान ही उठाना पड़े, धोखा ही खाना पड़े तो ऐसे अवसरों पर भी हे प्रभो! मुझे ऐसी शक्ति दो कि मैं तुम्हारे ऊपर संदेह न करूँ।

मनुष्य की बनाई विधियाँ गलत नतीजे तक पहुँच रही हैं तो इन्हें बदलना होगा। वस्तुतः आए दिन इन्हें बदला ही जा रहा है। लेकिन अब भी आशा की ज्योति बुझी नहीं है। महान् भारतवर्ष को पाने की संभावना बनी हुई है, बनी रहेगी।

मेरे मन! निराश होने की जरूरत नहीं है।

शब्दार्थ और टिप्पणी

तस्करी चोरी **मनीषी** पंडित, मेधावी **माहौल** परिस्थिति **निरीह** निराधार **फरेब** धोखा **भीरु** कायर **आलोड़न** मथना, हिलोरना **निकृष्ट** अधम, नीच **गुमराह** भुला हुआ **पैमाना** मापदंड **दकियानूसी** पुराने ख्यालवाला **त्रुटि** कमी, गलती **कातर** लाचार

मुहावरे

मन बैठ जाना उदास होना, मन मारना **फलना-फूलना** समृद्ध होना, विकसित होना **पर्दाफाश करना** भेद खोलना **ज्योति बुझना** मरना **कातर ढंग से देखना** भयभीत होकर देखना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नो के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए :

(1) आज समाचारपत्र में कौन-कौन से समाचार भरे रहते हैं ?

(2) देश का वातावरण आज कैसा बन गया है ?

(3) भारतवर्ष ने किसको अधिक महत्त्व नहीं दिया है ?

(4) मनुष्य के मन में कौन-कौन से विचार है ?

(5) भारतवर्ष किसको धर्म रूप में देखता आ रहा है ?

(6) बस कंडक्टर क्या लेकर लौटा था ?

2. निम्नलिखित प्रश्नो के दो-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) लोगों में महान मूल्यों के बारे में आस्था क्यों हिल गई है ?

(2) लेखक क्या देखकर हताश हो जाना उचित नहीं मानते ?

(3) देश के दरिद्रजनों की हीन अवस्था दूर करने के लिए क्या किया गया है ?

(4) कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने प्रार्थना-गीत द्वारा भगवान से क्या याचना की है ?

3. निम्नलिखित प्रश्नो के पाँच-छ वाक्यों में उत्तर लिखिए :

(1) लेखक का मन क्यों बैठ जाता है ?

(2) भारतवर्ष को 'महामानव' समुद्र क्यों कहा गया है ?

(3) धर्म को भारतवर्ष में श्रेष्ठ क्यों माना गया है ?

(4) कंडक्टरने अपनी ईमानदारी कैसे बताई ?

4. मुहावरों का अर्थ देकर वाक्य में प्रयोग कीजिए :

मन बैठ जाना, पर्दापत्रक करना, फलना-फूलना, हवाइयाँ उडना, पर्दाफाश, ढाँढस बँधाना, कातर ढंग से देखना

शब्द-समूह के लिए एक-एक शब्द दीजिए :

धर्म से डरनेवाले, मिलन की भूमि, सुख देनेवाला

5. विशेषण बनाइए :

भारत, समाज, क्रोध, समय, धर्म

6. भाववाचक बनाइए :

डाकू, आदमी, बहुत, सभ्य, मानव

7. विरोधी शब्द बनाइए :

ईमानदार, भ्रष्टाचार, आंतरिक, सबल

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- इस समय सुखी वही है, जो कुछ नहीं करता।
  हर अंधकार के पीछे सुबह का सूरज अवश्य छिपा होता है।
  - दोनों विधानों को समझाइए:

शिक्षक-प्रवृत्ति

- 'निराश नहीं होना चाहिए। इस विषय की चर्चा कीजिए।
  भारतवर्ष के 'महान मनीषियों' के बारे में वर्ग में अधिक जानकारी दीजिए।

मुहावरे

* **जब कोई वाक्यांश अपने साधारण (शाब्दिक) अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ को व्यक्त करे, तो उसे मुहावरा कहते हैं। जैसे नीचे दिए गए उदाहरणों पर ध्यान दीजिए-**

मुहावरा	**शाब्दिक अर्थ**	**विशेष अर्थ**
- चिकना घडा	ऐसा घडा जो चिकना हो	जिस पर किसी बात का असर न हो
- होंठ काटना	होंठ को काटना	आश्चर्य में पड़ना
- रात-दिन एक करना	रात और दिन को एक करना	कड़ी मेहनत करना

* **मुहावरे के प्रयोग में निम्नलिखित सावधानियाँ बरतनी चाहिए:**

(1) मुहावरों का प्रयोग उनके असली रूपों में ही करना चाहिए । उनके शब्द बदले नहीं जाते हैं। जैसे 'अक्ल का दुश्मन' एक मुहावरा है। यदि इसके स्थान पर 'अक्ल का शत्रु' प्रयोग किया जाए या 'नौ-दो ग्यारह होना' की जगह 'आठ तीन ग्यारह होना' किया जाए तो सर्वथा अनुचित है।

(2) मुहावरे वाक्यों में ही शोभते हैं, अलग नहीं। जैसे - यदि कहें 'कान काटना' तो इसका कोई अर्थ व्यंजित नहीं होता, किन्तु यदि ऐसा कहा जाय - 'वह छोटा बच्चा तो बड़े-बडों के कान काटता हैं' तो वाक्य में अद्‌भुत लाक्षणिकता, लालित्य और प्रवाह स्वत: आ जाता है।

(3) मुहावरे का प्रयोग करते समय इस बात का सदैव ख्याल रखना चाहिए कि समुचित परिस्थिति, पात्र, घटना और प्रसंग का वाक्य में उल्लेख अवश्य हो। केवल वाक्य-प्रयोग कर देने पर संदर्भ के अभाव में मुहावरे अपने अर्थ को अभिव्यक्त नहीं कर सकते हैं।

जैसे - नौ दो ग्यारह होना - भाग जाना ।

इस मुहावरे का वाक्यप्रयोग और स्पष्टता समझिए ।

वाक्यप्रयोग : शेर को देखते ही हिरण नौ दो ग्यारह हो गया।

स्पष्टता : शेर, हिरण का शिकार करता है; क्योंकि वह शेर का भक्ष्य है। कोई जीव जान बुझकर मरना नहीं चाहता। अतएव, शेर को देखकर हिरण अपनी जान बचाने के लिए भागेगा ही । 'नौ दो ग्यारह होना' का अर्थ व्यंजित हुआ - 'भाग जाना' ।

यदि सीधा ऐसा वाक्य बनाया जाय- 'हिरण नौ दो ग्यारह हो गया' - तो मुहावरे का अर्थ बिलकुल स्पष्ट नहीं हो पाएगा ।

(4) मुहावरे का एक विलक्षण अर्थ होता है । इसमें वाच्यार्थ का कोई स्थान नहीं होता। जैसे- 'आग में घी डालना' का जब वाक्यप्रयोग होगा, तब इसका अर्थ होगा- 'क्रोध को भड़काना ।'

(5) मुहावरों के वाक्य-प्रयोग अलग-अलग रूप से हो सकते हैं-

जैसे : पानी-पानी होना - बहुत लज्जित होना ।

1. इसमें पानी-पानी होने की क्या जरूरत है ? इस उम्र में ऐसी गलतियाँ हो ही जाती है।
2. तुम कुछ भी कहो, वह आज सबके सामने उन्हें पानी-पानी करके छोडेगा।
3. बात में जरुर दम है, तभी तो वह व्यक्ति आज मेरे सामने पानी-पानी है।
4. भरी सभा में पोल खुल जाने से मुखियाजी पानी-पानी हो गए।

●

4 कर्ण का जीवन-दर्शन

रामधारीसिंह 'दिनकर'

(जन्म : ई. सन् 1908 : निधन : ई. सन् 1974)

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि रामधारीसिंह 'दिनकर' का जन्म बिहार के मुंगेरे जिले के सिमरिया नामक गाँव के एक किसान परिवार में हुआ था। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा मुंगेर तथा उच्च शिक्षा पटना में प्राप्त की। पटना विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त करके कुछ समय तक अध्यापनकार्य किया। दिनकरजी सीतामढ़ी में सब रजिस्ट्रार और मुज्जफरपुर कॉलेज में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष रहे। वे भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति और भारत सरकार की हिन्दी सलाहकार समिति के अध्यक्ष भी रहे थे।

दिनकरजी की सब-से बड़ी विशेषता है- अपने देश और युग के प्रति-जागरूकता। कवि ने तत्कालीन घटनाओं - विषमताओं का खुलकर चित्रण किया है। उनकी वाणी में शक्ति है, ओज है। उनकी कविता में शोषित और पीड़ित वर्ग की व्यथा और उससे मुक्ति का संघर्ष है।

'उर्वशी', 'रश्मिरथी', 'रेणुका', 'हुंकार', 'रसवंती', 'कुरूक्षेत्र' उनकी काव्यकृतियाँ हैं। 'उर्वशी' के लिए उन्हें सन् 1972 का ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला था। 'संस्कृति के चार अध्याय' उनका चिंतन ग्रंथ है, जिसे साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 'अर्धनारीश्वर', 'मिट्टी की ओर' आदि उनकी प्रमुख गद्य रचनाएँ हैं। उनका कृतित्व गुणवत्ता और परिमाण दोनों दृष्टि से विपुल है।

प्रस्तुत खंण्डकाव्यांश में 'रश्मिरथी' महारथी कर्ण के करुण किन्तु भव्य जीवन की मीमांसा करनेवाला खण्डकाव्य है। सारे अन्यायों को सहकर कर्ण जन्मजात महानता पर पुरुषार्थजन्य महानता की विजय चाहता है। अंत में जब पाण्डवश्रेष्ठ के रूप में सब कुछ प्राप्त करने का प्रलोभन सामने आता है तब भी वह अविचलित रहता है और जिसने आज तक साथ दिया उस मित्र को किसी भी मोल पर छोड़ना नहीं चाहता। कृष्ण, कर्ण को पाण्डवों के पक्ष में ले आने के लिए उससे मिलते हैं, उस कथाप्रसंग से प्रस्तुत काव्यांश लिया गया है।

वैभव-विलास की चाह नहीं, अपनी कोई परवाह नहीं,
बस यहीं चाहता हूँ केवल, दान की देव सरिता निर्मल,
करतल से झरती रहे सदा,
निर्धन को भरती रहे सदा।
तुच्छ है, राज्य क्या है केशव? पाता क्या नर कर प्राप्त विभव?
चिन्ता प्रभूत, अत्यल्प हास, कुछ चाकचिक्य, कुछ क्षण विलास।
पर, वह भी यही गँवाना है,
कुछ साथ नहीं ले जाना है।
मुझ-से मनुष्य जो होते हैं, कंचन का भार न ढोते हैं,
पाते हैं धन बिखराने को, लाते हैं रतन लुटाने को।
जग से न कभी कुछ लेते हैं,
दान ही हृदय का देते हैं।
प्रासादों के कनकाभ शिखर, होते कबूतरों के ही घर,
महलों में गरुड़ न होता है, कंचन पर कभी न सोता है।
बसता वह कहीं पहाड़ों में,
शैलों की फटी दरारों में।
होकर समृद्धि-सुख के अधीन, मानव होता नित तपःक्षीण,
सत्ता, किरीट, मणिमय आसन, करते मनुष्य का तेज हरण।
नर विभव-हेतु ललचाता है,
पर, वही मनुज को खाता है।

चाँदनी, पुष्प-छाया में पल, नर गले बने सुमधुर, कोमल,
पर, अमृत क्लेश का पिये बिना, आतप, अंघड़ में जिये बिना;
वह पुरुष नहीं कहला सकता,
विघ्नों को नहीं हिला सकता।
उड़ते जो झंझावातों में, पीते जो वारि प्रपातों में,
सारा आकाश अयन जिनका, विषघर भुजंग भोजन जिनका;
वे ही फणिबंध छुड़ाते है,
धरती का हृदय जुड़ाते है।
मैं गरुड़, कृष्ण! मैं पक्षिराज, सिर पर न चाहिए मुझे ताज,
दुर्योधन पर है विपद घोर, सकता न किसी विष उसे छोड़।
रणखेत पाटना है मुझको,
अहिपाश काटना है मुझको।

शब्दार्थ और टिप्पणी

वैभव धन-दौलत **विलास** सुखोपभोग **चाह** इच्छा, अभिलाषा **परवाह** चिन्ता, व्यग्रता **निर्मल** पवित्र, शुद्ध **करतल** हथेली **निर्धन** धनरहित, कंगाल, दरिद्र **विभव** धन, संपत्ति, ऐश्वर्य **प्रभूत** अधिक, प्रचूर **अत्यल्प** बहुत थोडा **हास** निंदा, उपहास **चाकचिक्य** चमक, चकाचौंध **कंचन** सुवर्ण, सोना **प्रासाद** देवताओं या राजाओं का घर **कनकाभ** स्वर्णिम आभावाले **शैल** पर्वत, पहाड़, चट्टान **दरार** दरज, चीर, फूट **तपःक्षीण** निर्बल **किरीट** मुकुट **तेज** प्रभाव, कान्ति, चैतन्यात्मक ज्योति, चमक **कोमल** मृदुल, सुकुमार **क्लेश** दुःख, कष्ट, वेदना **अमृत** मुक्ति **आतप** धूप, उष्णता, गरमी **अंघड** आँधी **झंझावात** वर्षा सहित तीव्र आँधी **वारि** जल, पानी **प्रपात** पहाड़ या चट्टान का खड़ा किनारा **अयन** गति, चाल, पथ, गमन **विष** गरल, ज़हर **भुजंग** सर्प **विपद** आपत्ति, संकट **धोर** भयंकर, विकराल **पाटना** ढेर लगा देना **अहिपाश** साँप का बंधन, फणिबंध

स्वाध्याय

1. **ऊँचे स्वर में पढ़िए और वाक्य में प्रयोग कीजिए :**
   अत्यल्प, चाकचिक्य, कनकाभ, तपःक्षीण, क्लेश, झंझावात, फणिबंध
2. **संक्षेप में उत्तर दीजिए :**
   (1) विभव से क्या प्राप्त होता है?
   (2) धन-संपत्ति किस लिए है?
   (3) समृद्धि-सुख के अधीन मानव का क्या होता है?
   (4) फणिबंध कौन छुड़ाते हैं?
3. **निम्नलिखित पंक्तियों का भावार्थ लिखिए :**
   (1) वैभव-विलास की चाह नहीं, अपनी कोई परवाह नहीं,
   बस यहीं चाहता हूँ केवल, दान की देव सरिता निर्मल,
   करतल से झरती रहे सदा,
   निर्धन को भरती रहे सदा।

(2) मैं गरुड़, कृष्ण ! मैं पक्षिराज, सिर पर न चाहिए मुझे ताज,
दुर्योधन पर है विपद धोर, सकता न किसी विध उसे छोड,
रणखेत पाटना है मुझको,
अहिपाश काटना है मुझको।

4. टिप्पणी लिखिए :

(1) कर्ण की अभिलाषा
(2) कर्ण का मित्रधर्म

5. विरोधी शब्द लिखिए :

निर्मल, निर्धन, प्रभूत, कोमल, अमृत

6. निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द कोष्ठक में से ढूँढकर उन शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजिए :

सुखोपभोग, हथेली, प्रचूर, दरज, आँधी, पानी, गरल, चट्टान

प्र	भू	त	सं	त
क	द	अं	ध	ड
र	रा	वि	ला	स
त	र	नि	शै	वा
ल	वि	ष	ल	रि

7. अंदाज अपना-अपना : अपना मत स्पष्ट कीजिए :

(1) यदि कोई जरूरतमंद इन्सान आपसे मदद माँगे तो आप क्या करते ?
(2) आपको पता चले कि आपका दोस्त संकट में फँसा हुआ है तो आप क्या करेंगे ?
(3) आपके पास जरूरत से ज्यादा धन-संपत्ति है, तो क्या करोंगे ?

योग्यता-विस्तार

- **प्रकल्प कार्य (Project Work) :**
  छात्रों से निर्देशित विषय पर प्रकल्प कार्य करवाइए ।
  (1) भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण योगदान देनेवाली व्यक्तियों की जानकारी प्राप्त कीजिए।
  (2) प्रसिद्ध दानवीरों के जीवन-प्रसंगों का संकलन कीजिए।

●

5 स्वराज्य की नींव

विष्णु प्रभाकर

विष्णु प्रभाकर का जन्म मुज़फ्फरपुर जिले के मीरनपुर गाँव में हुआ था। इन्होंने प्रारंभिक शिक्षा अपने गाँव में और उच्च शिक्षा हिसार में प्राप्त की थी। कई वर्षों तक पंजाब सरकार की सेवा करने के बाद सन् 1974 से ये दिल्ली आ गए और तब से दिल्ली रहकर पूर्ण समय के लिए साहित्य सेवा में लगे हैं। आपने कहानी, उपन्यास, जीवनी, नाटक, एकांकी, संस्मरण और रेखाचित्र आदि विधाओं में पर्याप्त मात्रा में लिखा हैं। आपकी प्रमुख रचनाए 'ढ़लती रात', 'स्वप्नमयी' (उपन्यास), 'संघर्ष के बाद' (कहानी संग्रह), 'नव-प्रभात', 'डॉक्टर' (नाटक), 'प्रकाश और परछाईयाँ', 'बारह एकांकी', 'अशोक' (एकांकीसंग्रह), 'जाने-अनजाने' (संस्मरण और रेखाचित्र), 'आवारा मसीहा' (शरतचंद्र की जीवनी) आदि।

विष्णु प्रभाकर की रचनाओं में प्रारंभ से ही स्वदेश प्रेम व राष्ट्रीय चेतना और समाज-सुधार का स्वर प्रमुख रहा है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद आपने आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र में नाटक-निर्देशक के पद पर काम किया। बाद में स्वतंत्र लेखन को अपनी जीविका का साधन बना लिया। आपका समस्त साहित्य मानवीय अनुभूतियों से जुड़ा हुआ है। आपकी रचनाओं में रोचकता एवं संवेदनशीलता सर्वत्र व्याप्त है तथा भाषा सहज व सरल है।

प्रस्तुत एकांकी 'स्वराज्य की नींव' में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857) में लक्ष्मीबाई के त्याग और संघर्ष का वर्णन किया गया है। स्वराज की नींव रखने में स्त्रियों की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रस्तुत एकांकी के पात्र स्वराज्य की नींव के पथ्थर है; जिनके त्याग, तपस्या व बलिदान के द्वारा भले ही स्वराज्य प्राप्त नहीं हुआ, लेकिन वे स्वराज्य की नींव का पथ्थर बनकर जनमानस में देशप्रेम व नवजागरण की भावना जगाने में अपनी सार्थकता समझते हैं।

पात्र

लक्ष्मीबाई	**जूही**
मुंदर	**रघुनाथराव**
तात्या	**सेनानायक**

(रंगमंच पर युद्धभूमि का दृश्य अंकित किया जा सकता है। कैंप कहीं पास ही लगा हुआ है। महारानी लक्ष्मीबाई के तंबू का एक भाग दिखाई देता है। परदा उठने पर महारानी लक्ष्मीबाई अपनी सखी जूही के साथ उत्तेजित अवस्था में मंच पर प्रवेश करती हैं। दोनों लाल कुर्ती के सैनिकों की वेशभूषा में हैं।)

लक्ष्मीबाई : मेरे देखते-देखते क्या से क्या हो गया जूही! झाँसी, कालपी, ग्वालियर कहाँ गई परंतु मंज़िल है कि पास आकर भी हर बार दूर चली जाती है। स्वराज्य को आते हुए देखती हूँ, परंतु दूसरे ही क्षण मार्ग में हिमालय अड़ जाता है। उसे पास करती हूँ तो महासागर की डरावनी लहरें थपेड़े मारने लगती हैं। उनसे जूझती हूँ तो नाविक सो जाते हैं। देखो जूही, उधर क्षितिज पर देखो। कैसी लपलपाती हुई लपटें उठ रही हैं! सारा आकाश धूम घटाओं से छाया हुआ है। प्रलय की भूमिका है, लेकिन राव साहब हैं कि रक्तमंडल की छाया में ऐशो आराम में मशगूल हैं। (आवेश में आते-आते सहसा मौन हो जाती है। जूही कुछ कहने के लिए मुँह खोलती है कि महारानी फिर बोल उठती है।) जूही, जूही, मैंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी लेकिन झाँसी हाथ से निकल गई जूही। (सहसा तीव्र होकर) नहीं, नहीं, झाँसी हाथ से नहीं निकली। मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी। मैं अकेली हूँ, लेकिन उससे क्या? मैं अकेली ही झाँसी लेकर रहूँगी।

जूही : कौन कहता है, आप अकेली हैं महारानी, आप तो गीता पढ़ती हैं। फिर यह निराशा कैसी?

लक्ष्मीबाई : मैं निराश नहीं हूँ। मैं जानती हूँ कि मैं झाँसी लेकर रहूँगी, लेकिन क्या तुम नहीं जानती कि उस दिन बाबा गंगादास ने मुझसे क्या कहा था? ''जब तक हमारे समाज में छुआछूत और ऊँच-नीच का भेद नहीं मिट जाता, जब तक हम विलासप्रियता को छोड़कर जनसेवक नहीं बन जाते, तब तक स्वराज्य नहीं मिल सकता। वह मिल सकता है केवल सेवा, तपस्या और बलिदान से।''

जूही : लेकिन महारानी, उन्होंने यह भी तो कहा था कि स्वराज्य प्राप्ति से बढ़कर है स्वराज्य की स्थापना के लिए भूमि तैयार करना; स्वराज्य की नींव का पथ्थर बनना। सफलता और असफलता दैव के

हाथ में है। लेकिन नींव के पथ्थर बनने से हमें कौन रोक सकता है? वह हमारा अधिकार है।

लक्ष्मीबाई : (मुस्कराकर) शाबाश मेरी कर्नल! तुम लोगों से मुझे यही आशा है। जिस स्वराज्य की नींव तुम जैसी नारियाँ बनने जा रही हैं, वह निश्चय ही महान होगा। मुझे इस बात की चिंता नहीं है कि वह मेरे जीवनकाल में आता है या नहीं आता, लेकिन मुझे इस बात का दु:ख अवश्य है कि हमारे पास शक्ति है, फिर भी हम दुर्बल हैं। हमारे पास तात्या जैसे सेनापति हैं, फिर भी हमारी सेना में अनुशासन नहीं है। हमारे पास ग्वालियर का किला है, फिर भी हम कुछ नहीं कर पा रहे हैं। क्यों? जानती हो क्यों?

जूही : जानती हूँ महारानी! हम विलासिता में डूब गए है। (तभी मुस्कराती हुई मुंदर वहाँ प्रवेश करती है।)

मुंदर : कौन कहता है कि हम विलासिता में डूब गए हैं? विलासिता में डूबे हैं रावसाहब। बाँदा के नवाब, सेनापति तात्या।

जूही : (सहसा) नहीं, मुंदर। सेनापति नहीं।

मुंदर : (मुसकराती है) ओह, समझी। तुम तो उनका पक्ष लोगी ही।

जूही : (दृढ़ स्वर में) मैं उसका पक्ष नहीं लेती, लेकिन जो तथ्य है, उसको छिपाया नहीं जा सकता। सरदार तात्या राव साहब को अपने तन-मन का स्वामी मानते हैं।

मुंदर : और तुम उनको अपना स्वामी मानती हो।

जूही : हाँ, मैं उनको अपना स्वामी मानती हूँ और मानती रहूँगी, लेकिन उनसे भी अधिक मैं महारानी को अपना स्वामी मानती हूँ और महारानी से भी बढ़कर मैं अपने देश को अपना स्वामी मानती हूँ। देश के लिए मैं सरदार को भी ठुकरा सकती हूँ, ठुकरा चुकी हूँ।

मुंदर : (सकपका कर) जूही तू तो नाराज़ हो गई। मेरा यह मतलब नहीं था। मैं तो केवल इतना ही कहना चाहती थी कि जब तूने उन्हें अपना स्वामी मान लिया है तो तू उन्हें रोकती क्यों नहीं?

लक्ष्मीबाई : जूही ने उन्हें रोका है मुंदर। मैं जानती हूँ। जब राव साहब के कहने पर तात्या इसे नाचने के लिए बुलाने को आए थे तो इसने उनको बुरी तरह दुत्कार दिया था।

जूही : हाँ रानी, मैं स्वराज्य के लिए नाच सकती हूँ। बराबर नाचती रही हूँ, परंतु विलासिता में डूबने के लिए अपनी कला को किसी के गले की फाँसी नहीं बना सकती हूँ। जो मुझको ऐसा करने के लिए कहते हैं, उनको मैं ठोकर ही मार सकती हूँ।

लक्ष्मीबाई : (दीर्घ नि:श्वास लेकर) ठोकर ही तो नहीं मार सकती जूही। यही दर्द तो हमें कचोट रहा है। अगर ठोकर मार कर हम उनकी मदहोशी दूर कर सकते तो बात ही क्या थी?

जूही : बाई साहब, मैं औरों की बात नहीं जानती। मुझे आज्ञा दीजिए, मैं ठोकर मारने को तैयार हूँ।

मुंदर : और मैं भी तैयार हूँ बाई साहब। चलो, हम सब चलकर उनकी नींद हराम कर दें।

लक्ष्मीबाई : नहीं मुंदर, नहीं। हम उनकी नींद हराम नहीं कर सकते। अब तो दुश्मन की ठोकर ही उनको उस नींद से जगा सकती है।

जूही : दुश्मन की ठोकर? यह आप क्या कह रही हैं?

लक्ष्मीबाई : हाँ जूही, दोस्त की ठोकर अविश्वास की खाई को और भी चौड़ा कर देती है। क्या तुम नहीं जानती कि हम एक दूसरे को किस दृष्टि से देखते हैं? क्या ऐसी स्थिति में मेरे कुछ कहने से शंकाओं की घटा और भी गहरा नहीं उठेगी?

मुंदर : बाई साहब ठीक कहती हैं। शंकाएँ अविश्वास पैदा करेंगी और उस अविश्वास से उत्पन्न निराशा को दूर करने के लिए पायल की झंकार और भी झनक उठेगी। श्रीखंड और लड्डुओं पर जान देनेवाले ब्राह्मणों के आशीर्वाद का स्वर और भी तेज हो उठेगा। (सहसा कहीं दूर तोपों का स्वर उठता है।)

लक्ष्मीबाई : और जूही तू अगर तात्या को खोज सके तो तुरंत उन्हें यहाँ आने के लिए कह।

जूही : खोज क्यों नहीं सकती? आपकी आज्ञा होने पर मैं उन्हें पाताल से भी खींचकर ला सकती हूँ। (जाने को मुड़ती है कि रघुनाथराव तेजी से प्रवेश करते हैं।)

रघुनाथराव : महारानी, आपने सुना?

लक्ष्मीबाई : क्या रघुनाथ?

रघुनाथराव : महारानी, जनरल रोज की सेना ने मुरार में पेशवा की सेना को हरा दिया।

जूही : (काँपकर) क्या पेशवा की सेना हार गई?

लक्ष्मीबाई : पेशवा की सेना हार गई, यह अच्छा ही हुआ। अब पेशवा की आँखें खुलेंगी। रघुनाथ अपनी सेना को तैयार होने की आज्ञा दो। रोज ग्वालियर का किला नहीं ले सकेगा।

रघुनाथ : मैं जानता हूँ, वह कभी नहीं ले सकेगा। मैं अभी सेना को कूच के लिए तैयार करता हूँ। केवल आपको सूचना देने के लिए आया था। (जाता है।)

लक्ष्मीबाई : और जूही तुम भी जाओ। (सहसा बाहर देखकर) लेकिन ठहरो, शायद सेनापति तात्या इधर ही आ रहे हैं।

जूही : (बाहर देखकर) जी हाँ, ये तो सरदार तात्या ही हैं। (सरदार तात्या का प्रवेश)

लक्ष्मीबाई : कहिए सरदार तात्या, आज आप इधर कैसे भूल पड़े?

तात्या : बाई साहब, मैं किसी के लिए सरदार हो सकता हूँ, पर आपके लिए तो सेवक ही हूँ।

लक्ष्मीबाई : (व्यंग्य से) इतने बड़े सेनापति को इस प्रकार एक नारी के सामने झुकते लज्जा नहीं आती? खैर, छोड़ो इस बात को। यह तुम्हारी विनम्रता है। लेकिन यह तोपों की आवाज़ कैसी आ रही है? कौन सा उत्सव मनाया जा रहा है? शायद चाटुकारों में जागीर बाँटना अभी खत्म नहीं हुआ है?

तात्या : बाई साहब, आपको हमें लज्जित करने का पूरा अधिकार है। हम इसी योग्य हैं, लेकिन जो कुछ हो रहा है, वह आप जानती ही हैं।

लक्ष्मीबाई : शायद ब्रह्मभोज के उपलक्ष्य में ये तोपें चल रही हैं। श्रीखंड और लड्डुओं के लिए घी शक्कर की कमी तो नहीं पडी।

जूही : सरकार इस बार इनको माफ़ कर दीजिए।

तात्या : (व्यग्र होकर) बाई साहब, आप यूँ कब तक फटकारती रहेंगी?

लक्ष्मीबाई : तू कहती है, अच्छा। लेकिन (मुंदर का प्रवेश)

मुंदर : सरकार सेना तैयार है।

लक्ष्मीबाई : तो मैं भी तैयार हूँ। तात्या तुमसे मुझे बहुत आशाएँ थीं। तुम्हारे रहते यह सब क्या हो गया?

जूही : सरकार, ये स्वामिभक्त हैं।

लक्ष्मीबाई : लेकिन आज हमें देशभक्तों की आवश्यकता है। खैर, अब भी कुछ नहीं बिगड़ा। अब भी बहुत कुछ किया जा सकता है।

तात्या : इसीलिए तो आया हूँ बाई साहब। आप जो कहेंगी वही करूँगा। जो योजना बनाएँ, उसी पर चलूँगा।

लक्ष्मीबाई : तो जाओ, तलवार सँभाल लो। नूपुरों की झंकार के स्थान पर तोपों का गर्जन होने दो। भूल जाओ राग-रंग। याद रखो, हमें स्वराज्य लेना है। हमें रणभूमि में मौत से जूझना है।

तात्या : महारानी आपकी जय हो। मैं युद्ध के लिए तैयार होकर आया हूँ।

लक्ष्मीबाई : जानती हूँ। लेकिन सेनापति, इस बार यह याद रखना कि यदि दुर्भाग्य से विजय न मिल सकी तो तुम्हें सेना और सामग्री दोनों को दुश्मन के घेरे से निकालकर ले जाना है।

तात्या : ऐसा ही होगा।

लक्ष्मीबाई : तात्या, मेरा मन कहता है कि यह मेरे जीवन का अंतिम युद्ध है। जीत हो या हार, मुझे किसी बात की चिंता नहीं। चिंता केवल इस बात की है, हमारी वीरता कलंकित न होने पाए।

तात्या : बाई साहब ! वीरता आपको पाकर धन्य है। आपके रहते कलंक हमारी छाया को भी नहीं छू सकेगा। आज्ञा दीजिए, प्रणाम।

लक्ष्मीबाई : प्रणाम तात्या ! मैं सीधी युद्धभूमि में जा रही हूँ, देर न लगाना। (तात्या चला जाता है।)

मुंदर : सरकार आज मैं बराबर आपके साथ रहूँगी।

जूही : और मैं तोपखाना सँभालूँगी।

लक्ष्मीबाई : और हम सब मिलकर या तो स्वराज्य प्राप्त करके रहेंगे या स्वराज्य की नींव का पत्थर बनेंगे। हर-हर महादेव। (तीनों हर-हर महादेव का उद्घोष करती हैं। पृष्ठभूमि में यही उद्घोष उभरकर आता है, जो मंच पर प्रकाश के धुँधलाते न धुँधलाते सब कहीं छा जाता है। फिर धीरे-धीरे शांति छाने लगती है। प्रकाश उभरने लगता है और पृष्ठभूमि में गीतापाठ का स्वर उठता है।)

शब्दार्थ और टिप्पणी

प्रलय सृष्टि का विनाश **एशोआराम** विलासप्रियता **प्रतिज्ञा** प्रण **दुत्कारना** धिक्कारना **स्वराज्य** अपना राज्य **व्यग्र** आतुर **राग-रंग** गाना-बजाना **रणभूमि** लड़ाई का मैदान **अंकित** निशान लगा हुआ **उत्तेजित** भड़का हुआ

मुहावरे

अड़ जाना किसी बात को मनवाने की जिद करना **थपेड़े मारना** समस्याओं का तेजी से उभरना **हाथ से निकल जाना** अपने बस में न रहना **भूमि तैयार करना** आधार बनाना, भूमिका बनाना **नींव का पथ्थर बनना** किसी खास कार्य की शुरूआत करना **नींद हराम करना** गहरी चिंता में डाल देना **पाताल से खींच लाना** किसी इच्छित चीज को कहीं से ढूँढ लाना **आँखें खुलना** सजग होना **मौत से जूझना** साहस से मौत का सामना करना

स्वाध्याय

1. एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) रानी लक्ष्मीबाई की चिंता का कारण क्या था?

(2) बाबा गंगादास ने रानी लक्ष्मीबाई से क्या कहा था?

(3) रानी लक्ष्मीबाई ने क्या प्रतिज्ञा की थी?

(4) जूही सेनापति तात्या का पक्ष क्यों लेती है?

(5) तात्या रानी लक्ष्मीबाई के सामने लज्जित क्यों हो उठे?

2. पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) मार्ग में हिमालय अड़ने, डरावनी लहरों के थपेड़े मारने, नाविकों के सो जाने से क्या अभिप्राय है?

(2) रानी लक्ष्मीबाई देशभक्ति की एक अद्भूत मिसाल थीं- समजाइए।

(3) 'स्वराज्य की नींव' शीर्षक कहाँ तक सार्थक है? प्रस्तुत एकांकी के लिए कोई अन्य शीर्षक दीजिए।

(4) प्रस्तुत एकांकी में से उन कथनों को छाँटिए जिससे पता चलता है कि युद्ध की छाया में भी राव साहब वैभव विलास में डूबे थे?

3. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) ''स्वराज्य प्राप्ति से बढ़कर है स्वराज्य की स्थापना के लिए भूमि तैयार करना, स्वराज्य की नींव का पथ्थर बनना।''

(2) ''शंकाएँ अविश्वास पैदा करेंगी और उस अविश्वास से उत्पन्न निराशा को दूर करने के लिए पायल की झंकार और भी झनक उठेंगी।''

(3) ''दोस्त की ठोकर अविश्वास की खाई को और चौड़ा कर देती हैं?''

4. **सही शब्द चुनकर वाक्य पूर्ण कीजिए :**

(1) वह मिल सकता है, केवल सेवा, तपस्या और ..... से। (बलिदान/युद्ध)

(2) महासागर की डरावनी ..... थपेड़े मारने लगती हैं। (लहरें/हवाएँ)

(3) कौन कहता है कि ..... में डूब गए हैं? (विलासिता/तपस्या)

(4) मैं ..... के लिए नाच सकती हूँ। (विजय/स्वराज्य)

(5) हमारी ..... कलंकित न होने पाए। (श्रेष्ठता/वीरता)

5. **शब्दसमूह के लिए एक शब्द :**

धरती और आकाश के मिलने का स्थान क्षितिज **निराशा या क्रोध में मुँह से निकलने वाली श्वास** नि:श्वास **दहीं से बननेवाला एक व्यंजन** श्रीखंड **ब्राह्मणों को खिलाया जानेवाला भोज** ब्रह्मभोज **स्वामि के प्रति श्रद्धा रखनेवाला** स्वामिभक्त

6. **उदाहरण के अनुसार शब्द बनाए :**

राज्य - स्व+राज्य = स्वराज्य

देश, भाव, तंत्र, जन

7. **उदाहरण के अनुसार शब्द बनाए :**

सुन्दर - सुन्दरता - सौंदर्य

शूर - शूरता

धीर - धीरता

उदार - उदारता

स्थिर - स्थिरता

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- सन् 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले किसी एक स्वतंत्रता सेनानी के जीवन पर दस पंक्तियाँ लिखिए।
- उन देशभक्त नारियों के नाम लिखिए जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर भाग लिया था।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- देश की आज़ादी के लिए शहीद होनेवाले किसी दो शहीदवीरों की फिल्म वर्गखंड में प्रस्तुत करें।

●

अशुद्ध और शुद्ध वाक्य

भाषा के वर्ण, शब्द तथा वाक्य आदि के प्रत्येक स्तर पर कुछ ऐसे निश्चित नियम होते हैं जिनसे भाषा का मानक स्वरूप बनता है। जो प्रयोग मानक स्वरूप से भिन्न है वह अशुद्धि है। वाक्यरचना की अशुद्धियों का मुख्य कारण होता है व्याकरणिक नियमों का सही रूप में न जानना। अत: हमें बोलने या लिखने के समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे द्वारा जो कुछ कहा या लिखा जाए, वह बिलकुल स्पष्ट, सार्थक और व्याकरण की दृष्टि से शुद्ध हो।

यहाँ हम शुद्ध वाक्यरचना के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करेंगे।

पदक्रम संबंधी नियम :

वाक्य में प्रयुक्त होनेवाले विभिन्न पदों को एक सुनिश्चित क्रम में रखने से वाक्य-रचना शुद्ध होती है। हिन्दी में पदक्रम संबंधी नियम निम्नलिखित हैं-

(1) वाक्य में पहले कर्ता फिर कर्म तथा अंत में क्रिया आते हैं। उदा.: जितेन्द्र क्रिकेट खेलता है।

(2) कर्ता और कर्म को छोड़कर शेष कारक प्राय: कर्ता और कर्म के बीच स्थित होते हैं।

उदाहरण - माँ अपने पुत्रों के लिए खाना बनाती हैं। (सम्प्रदान)

- माताजी चाकू से फल काटती है। (करण)
- पेड़ से पत्ते गिरते हैं। (अपादान)
- लड़के मैदान में क्रिकेट खेलते हैं। (अधिकरण)

कुछ स्थलों पर ये कारक कर्म के बाद भी प्रयुक्त हो जाते हैं। जैसे-

- प्रियंदा ने मनमोहन को सिर से पैर तक देखा।

(3) प्रश्नवाचक पद प्रश्न के विषय से ठीक पहले प्रयुक्त होता है।

उदाहरण - अपराधी का पता चला?

- क्यों यह सम्राट अशोक की राजमुद्रा है?
- आप को न्याय का अवसर देना चाहता हूँ। आप तैयार है?

(4) क्रियाविशेषण सदैव क्रिया के पूर्व आते हैं।

उदाहरण - मोहन धीरे-धीरे चल रहा है।

- श्याम तेज़ी से दौड़ रहा था।

(5) वाक्य के विभिन्न पदों के बीच तर्कसंगति होनी चाहिए।

उदाहरण - छात्रों ने गुरुजी को एक फूलों की माला पहनाई । (अशुद्ध वाक्य)
छात्रों ने गुरुजी को फूलों की एक माला पहनाई । (शुद्ध वाक्य)

- यहाँ शुद्ध गाय का दूध मिलता है। (अशुद्ध वाक्य)
गाय का शुद्ध दूध यहाँ मिलता है। (शुद्ध वाक्य)

(6) 'न' या 'नहीं' का नकारात्मक अर्थ में प्रयोग क्रिया से पहले होता है।

उदाहरण - शिक्षक महोदय घर पर नहीं मिलेंगे।

- शिष्य क्षमा नहीं माँगेगा।

(7) आग्रह के लिए 'न' अव्यय का प्रयोग वाक्य के अंत में होता है।

उदाहरण - चलोगे न ।

- तुम भी जाओ न।

अन्वय संबंधी नियम :

'अन्वय' अर्थात् 'मेल' या 'अनुरूपता'। वाक्यों के पदों की क्रिया का उसके लिंग, वचन, काल और पुरुष के अनुरूप होना 'अन्वय' कहलाता है। अन्वय संबंधी नियम निम्नलिखित हैं-

(1) जब कर्ता और कर्म विभक्ति सहित होते हैं तो क्रिया सदा पुल्लिंग एकवचन में रहती है।

उदाहरण :

गलत	**सही**
1. माँ ने लड़की को **बुलाई**	1. माँ ने लड़की को **बुलाया।**
2. क्या आपने मीना को **पहचानी?**	2. क्या आपने मीना को **पहचाना?**

(2) भिन्न-भिन्न लिंगों की दो या अधिक व्यक्तिवाचक या जातिवाचक संज्ञाएँ एकवचन में आयें तो क्रिया अक्सर पुल्लिंग बहुवचन में आती है।

उदाहरण :

- राम, लक्ष्मण और जानकी वन में गये।
- गाय और बैल चर रहे हैं।
- राजा और रानी नगर में गये।
- जंगल में भालू, शेर और लोमड़ी रहते हैं।

(3) यदि कर्ता का लिंग अज्ञात हो तो क्रिया पुल्लिंग में प्रयुक्त होती है।

उदाहरण : तुम्हारा खर्चा कौन चलाता है?

(4) आदरार्थक एकवचन कर्ता के लिए क्रिया बहुवचन में प्रयुक्त होती है।

उदाहरण : गाँधीजी महान नेता थे।

(5) आँसू, दर्शन, दाम, प्राण, लक्षण, समाचार, हस्ताक्षर, होश, ओठ, बूँद, लोग आदि शब्दों के साथ क्रिया बहुवचन में प्रयुक्त होती है।

उदाहरण :

- उसके आँसू रुकते ही नहीं।
- मेरे प्राण संकट में आ गये।
- विवाह के शुभ समाचार मिले।
- लोग तो बात बनाते रहते हैं।

(6) प्रत्येक, हरएक, एक एक आदि शब्दों के साथ आनेवाले संज्ञा शब्दों का प्रयोग एकवचन में होता है।

उदाहरण :

गलत	**सही**
- क्लास में प्रत्येक <u>लड़के</u> उत्तीर्ण <u>होंगे</u>।	- क्लास में प्रत्येक <u>लड़का</u> उत्तीर्ण <u>होगा</u>।
- हरएक मजदूर अफ़सर से <u>मिलें</u>।	- हरएक मजदूर अफ़सर से <u>मिले</u>।
- आपके भाषण के एक एक शब्द <u>तुले हुए थे</u>।	- आपके भाषण का एक-एक शब्द <u>तुला हुआ था।</u>

(7) संज्ञा के लिंग के अनुसार ही सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

गलत	**सही**
- <u>तुम्हारी</u> स्कूल कहाँ है?	- <u>तुम्हारा</u> स्कूल कहाँ है?

– यह मेरी कॉलिज है।	– यह मेरा कॉलिज है।
– उसका देह दुर्बल है।	– उसकी देह दुर्बल है।
– उनका आवाज़ कोमल है।	– उनकी आवाज़ कोमल है।

(8) संज्ञा के लिंग के अनुसार ही विशेषण का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

गलत	**सही**
– आज मौसम सुहावनी है।	– आज मौसम सुहावना है।
– आजकल कपास महँगा है।	– आजकल कपास महँगी है।
– उसका नाक लम्बा है।	– उसकी नाक लम्बी है।
– पीतल पीली होती है।	– पीतल पीला होता है।

(9) संज्ञा के लिंग के अनुसार ही क्रिया का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

गलत	**सही**
– मेरी आम सड़ी हुई है।	– मेरा आम सड़ा हुआ है।
– तुमने झूठ क्यों बोली?	– तुमने झूठ क्यों बोला?
– आत्मा नहीं मरता।	– आत्मा नहीं मरती।
– बर्फ एक रुपये किलो बिकता है।	– बर्फ एक रुपये किलो बिकती है।

(10) संज्ञा के लिंग के अनुसार ही संबंध विभक्ति (का, की) का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण :

गलत	**सही**
– परमात्मा का महिमा अपार है।	– परमात्मा की महिमा अपार है।
– बंबई की बाज़ार अच्छी है।	– बंबई का बाज़ार अच्छा है।
– उसमें मुकाबला करने का सामर्थ्य नहीं है।	– उसमें मुकाबला करने की सामर्थ्य नहीं है।
– मुझे केवड़े की शरबत पसंद है।	– मुझे केवड़े का शरबत पसंद है।

अन्य नियम :

(1) विभक्ति संबंधी नियम :

(क) विभक्ति लगाने पर – यह, ये, वह, वे, कौन, जो, कोई... सर्वनाम के रूप बदल जाते हैं। जैसे–

विभक्ति-रहित रूप	**विभक्ति लगने पर रूप**
यह	इस
ये	इन
वह	उस
वे	उन
कौन	किस, किन
जो	जिस, जिन
कोई	किस, किन

उदाहरण :

गलत	सही
- यह घर में कौन रहता है?	- इस घर में कौन रहता है?
- ये लोगों में एकता नहीं है।	- इन लोगों में एकता नहीं है।
- वह आदमी को दौलत का घमंड है।	- उस आदमी को दौलत का घमंड है।
- वे लोगों को अनाज़ चाहिए।	- उन लोगों को अनाज चाहिए।
- आप कौन को बुलाते हैं?	- आप किसको (किसे) बुलाते हैं?
- ये थैलियाँ कौन की हैं?	- ये थैलियाँ किन की हैं?
- जोको पुकारूँ वहीं आवे।	- जिसको पुकारूँ वही आये।
- जो लड़कों को जाना हो वे तैयार हो जाएँ।	- जिन लड़कों को जाना हो वे तैयार हो जाएँ।
- कोई का पेन यहाँ रह गया।	- किसीका पेन यहाँ रह गया।

(ख) संज्ञा में प्रत्यय अलग से और सर्वनाम में प्रत्यय साथ में लिखा जाता है।

(ग) पुरुषवाचक सर्वनाम के बाद उसी व्यक्ति का यदि फिर से निर्देश करना हो तो 'अपना', 'अपनी' अपने आदि सर्वनामों का प्रयोग करना चाहिए।

उदाहरण :

गलत	सही
- मैं मेरा काम करता हूँ।	- मैं अपना काम करता हूँ।
- वे उनकी धून में मस्त हैं।	- वे अपनी धून में मस्त हैं।
- तुम तुम्हारे घर जाओ।	- तुम अपने घर जाओ।

(2) शब्दों का उचित प्रयोग :

(1) शब्द के अर्थ के संबंध में शब्द का वाक्य में प्रयोग करना आवश्यक है।

- हमें अपने माता-पिता की शुश्रूषा करनी चाहिए । (गलत)
- हमें अपने माता-पिता की सेवा करनी चाहिए । (सही)
  - 'शुश्रूषा' रोगी की की जाती है। माता-पिता एवं श्रेष्ठ जनों के लिए 'सेवा' शब्द का प्रयोग होना चाहिए।
- इस समय उनकी आयु 70 वर्ष है। (गलत)
  इस समय उनकी उम्र 70 वर्ष है। (सही)
  - 'आयु' जीवन की पूरी गणना को कहते हैं।
- तलवार एक उपयोगी अस्त्र है। (गलत)
  तलवार एक उपयोगी शस्त्र है। (सही)
  - 'अस्त्र' हाथ से फेंककर चलाया जानेवाला हथियार है; जबकि 'तलवार' हाथ में रखकर चलाई जाती है।

(2) दो बलाघातों का लगातार प्रयोग नहीं करना चाहिए।

जैसे :
- इसे बावजूद भी वह आता-जाता रहा। (गलत)
- इसके बावजूद वह आता-जाता रहा। (सही)

(3) शब्द का निरर्थक प्रयोग नहीं करना चाहिए।

- एक ही भाव को दो बार कहने से वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

उदाहरण :

(1) मात्र केवल छात्रों के लिए। (अशुद्ध)

केवल छात्रों के लिए (अथवा) मात्र छात्रों के लिए (शुद्ध)

(2) आपका भवदीय (अशुद्ध)

आपका (अथवा) भवदीय (शुद्ध)

- मुहावरे का गलत रूप से प्रयोग करने पर वाक्य अशुद्ध हो जाता है।

उदाहरण :

(1) उसके मुँह से फूल गिरते हैं। (अशुद्ध)

उसके मुँह से फूल झड़ते हैं। (शुद्ध)

(2) सर्व को दूध खिलाकर अच्छा काम नहीं कर रहे। (अशुद्ध)

सर्व को दूध पिलाकर अच्छा काम नहीं कर रहे। (शुद्ध)

- अपने नाम के साथ 'श्री' शब्द को छोड़कर वाक्य लिखना चाहिए।

उदाहरण :

(1) मेरा नाम श्री महेशभाई है। (गलत)

मेरा नाम महेशभाई है। (सही)

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :

(1) घर आता है वह आदमी।
(2) आज वहाँ मीना ने जाना है।
(3) वह बुद्धिमान स्त्री है।
(4) वृक्षों पर कोयल बोल रही है।
(5) उसे कितना आम चाहिए।
(6) बेटी तो पराया धन होता है न?
(7) सविता ने चंद्रिका को बुलायी।
(8) यह घर में कौन रहता है?
(9) रघुवीर को एक लड़की हुई है।
(10) मेरा नाम श्री मनोजकुमार है।
(11) आप यहाँ बैठो।
(12) वह बड़ा चालाक है।
(13) यद्यपि वह निर्धन है परंतु ईमानदार है।
(14) जो करेगा वह भरेगा।
(15) पुलिस के आते ही चोर दुम उठाकर भाग गया।

●

6 मेरी बीमारी श्यामा ने ली

हरिवंशराय बच्चन

(जन्म : सन् 1907 ई. : निधन : सन् 2003 ई.)

हिन्दी साहित्य में हरिवंशराय बच्चन का नाम उनकी एकमात्र कृति से ही अमर हो गया। हालाँ कि विपुल मात्रा में साहित्यसर्जन किया है। छायावादोत्तर काल के कवियों में 'बच्चन' एक विशिष्ठ सर्जक रहे हैं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के अंग्रेजी के प्राध्यापक के रूप में, तत्पश्चात् दिल्ली में सरकारी सेवा, आकाशवाणी और दो-एक अन्य स्थलों पर आपने सेवाएँ दी।

भारत के एक विशिष्ट कवि के रूप में राष्ट्रपतिजी ने उन्हें राज्यसभा का सदस्य मनोनीत्त किया था। प्रारंभिक नौकरी पायोनियर प्रेस में की थी।

'मधुशाला' के कवि के रूप में बच्चनजी को इतनी शोहरत मिली कि उनकी मधुशाला का सभा -सम्मेलनों, कवि-गोष्ठि आदि में होता था। लोग बड़ी संख्या में उमड़ते थे।

केम्ब्रिज युनि. से जोहन पेट्स नामक कवि के समग्र वाङमय पर आपने पीएच.डी. की है। केन्द्रीय मंत्रालय दिल्ली में आपने हिन्दी-विशेषज्ञ के रूप में अप्रतिम कार्य किया है। आपको कई पुरस्कार जैसे 'सोवियत लेन्ड पुरस्कार', 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' और 'पद्म विभूषण' आदि प्राप्त हुए है।

'तीर पर कैसे रूकूँ मैं आज, लहरों का निमंत्रण।'

और

'इस पार प्रिये तुम हो - मधू है, उस पार न जाने क्या होगा?'

जैसी काव्य-पंक्तियाँ आज भी लोगों की जबान पर है।

मधुशाला, निशा-निमंत्रण, सप्त रंगिनी, मिलन-यामिनी, आकुल अंतर और एकांत संगीत नामक इनके सुप्रसिद्ध काव्यसंग्रह हैं तो 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ', 'नीड़ का निर्माण फिर', 'बसेरे से दूर' और 'दश द्वार से सोपान तक' शीर्षक सें चार खंड़ो में लिखी आपकी आत्मकथा है। 'मेरी बीमारी श्यामा ने ली' आत्मकथांश है। जो 'क्या- भूलूँ क्या याद करूँ?' में से लिया गया है। बच्चनजी की प्रथम पत्नी का नाम श्यामा था, जो सही अर्थ में एक आदर्श जीवनसंगिनी थी। श्यामा की बीमारी, उसकी खुद की न होकर बच्चनजी की थी। जो सेवा करते करते ले ली गयी थी।' बच्चनजी का यह मंतव्य श्यामा की पति-भक्ति, कर्तव्य-परायणता और निष्ठा का प्रतीक है।

प्रस्तुत आत्मकथांश में श्यामा की बीमारी का दर्दनाक और कारुण्य-सभर निरुपण मिलता है, तो दूसरी ओर कवि की भावुकता और संवेदनशीलता का प्रगटीकरण मिलता है। (''क्या भूलूँ क्या याद करूँ'' श्री हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा है। हिन्दी के इस सुप्रसिद्ध कवि ने अपने संस्मरण बड़े ही रोचक ढंग से आलेखित किये हैं। कवि अपने जीवन की घटनाओं के साथ उस युग का चित्र भी दे देता है। प्रस्तुत अंश ''क्या भूलूँ क्या याद करूँ'' से लिया गया है। इसका यह शीर्षक- 'मेरी बीमारी श्यामा ने ली' विषयवस्तु का भी निर्देश करता है।)

मैं अपनी बीमारी को दुलरानेवालों में न था। सच कहूँ तो मैं अपनी बीमारियों के प्रति प्राय: निर्भय था। शायद मैंने गांधीजी के ही लेख में कहीं पढ़ा था कि बीमार होना अपराध है। हमें जो शरीर दिया गया है उसे हम स्वस्थ न रखें तो हम अपराधी तो हैं हीं। मैं इस तर्क को कुछ और आगे ले गया था। अपराधी को दंड़ देना चाहिए। मुझे जब कभी छोटी-मोटी बीमारी होती, जुकाम, बुखार, खाँसी, सिरदर्द तो मैं खाट पर न लेटता; और भी अपने से काम लेता। मुझे भरे-भुट्ट बुखार में अपनी रात की ट्यूशनों पर जाने की याद है। बुखार की गर्मी और तेज़ी में तो मैं और जोश से पढ़ाता-मज़दूरी करके रोटी कमानेवाले को बीमार पड़ने का क्या अधिकार है, बीमारी अमीरों की हरमजदगी है, गरीबों को उसे अपने पीछे न लगाना चाहिए- लिखने में तो ऊँचा बुखार मुझे सब तरह से सहायक, प्रेरक और प्रोत्साहक लगता; एक तरह की आग, जिससे मेरी अनुभूतियों में ताप आता, जिसमें गल-पिघलकर मेरा हृदय ढलता; एक तरह की भट्ठी जो मेरे विचार, भाव, कल्पनाओं को उबाल देकर उच्छलित करती। यह तो मैं नहीं कहूँगा कि बुखार में मैं अदबदा कर लिखता था, पर अगर मैं लिखना चाहता था तो बुखार मेरे लिए कोई बाधा नहीं बन सकता था। हल्के बुखार में तो मेरे सब काम हस्बमामूल होते रहते थे। कोई मेरा बदन छूकर कभी कहता था कि तुम्हें तो बुखार है तो मैं पट से जवाब देता था कि हाँ, बुखार है और मैं भी हूँ। शायद किपलिंग ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि कभी-कभी उसे बुखार में भी काम करना पड़ता था और जब वह बुखार में होता था तो और अच्छी कहानियाँ लिखता था। बुखार में कम लिखने की मुझे याद नहीं, वह कैसा बन पड़ा, इसका निर्णय मैं न देना चाहूँगा; प्रसंगवश मुझे याद आ गया है कि अपनी 'दो चट्टानें' की दो

सबसे बडी कविताएँ सात्रं के नोबल पुरस्कार ठुकरा देने पर और 'दो चट्टान'अथवा 'सिसिफ़स बरक्स हनुमान' मैंने प्लूरिसी में पड़े-पड़े लिखीं थीं। बहरहाल, जब मैं अपनी जवानी पर था, बीमारी मुझे पराजित न करती थी, मैं ही अपनी ज़िद से बीमारी को पराजित कर देता था- बुखार-सुखार आखिर कितने दिन चलता। विश्राम तिवारी कहा करते थे, ''मार के पीछे भूत भागै।'' मैंने अपने प्रयोग से सिद्ध किया था, ''काम के पीछे बुखार भागै।''

यह बुखार मामूली न था। इसका संबंध उस तूफ़ान से था जो पिछले नौ महीनों से मुझे झकझोर रहा था और जो शांत होने से पूर्व सबसे अधिक विध्वंसक झटका मुझको दे गया था। स्कूल बंद था। ट्यूशनों पर मैं जाता था। उनकी आमदनी की मुझे जरूरत थी। किताबों की बिक्री अभी नियमित नहीं थी। क़र्ज सिर पर चढ़े थे। बुखार दस दिन चला, बीस दिन चला, महीनेभर चला, दो महीने चला, जुलाई आ गई। अब बुखार के साथ ट्यूशन पर ही जाना न होता, दिनभर स्कूल में पढ़ाना भी पड़ता। बुखार का नमूना वही, सुबह बिलकुल नहीं, शाम को 101^0-102^0 के बीच। कमज़ोरी दिन-दिन बढ़ती हुई, कभी-कभी धीमी खाँसी। दवा, शौकिया दवाबाँटू एक होमियोपैथ कर रहा था। कभी-कभी सोचता, क्या मुझे तपेदिक हो गया है? हो गया हो तो एलोपैथी का इलाज तो अपने बूते के बाहर है। क्या उस समय मेरी जिएवा पर सरस्वती बैठी थी जब मैंने कहा था कि श्यामा का बुखार मैं लेने जा रहा हूँ? बैठी हों तो कितना अच्छा है! क्या मैं बीमार हूँ इसलिए श्यामा स्वस्थ है जिसने पिछले छह वर्षों से इन महीनों में ज्वर-मुक्ति नहीं जानी है? पर श्यामा को मेरी बीमारी भीतर ही भीतर खाये जा रही थी, उसने अपने इच्छाबल से जैसे अपने को स्वस्थ कर लिया था कि वह भी कहीं मेरी चिंता न बन जाए। उसके अतिरिक्त मेरी बीमारी का शायद किसी को पता भी न था, क्योंकि सारे काम तो मैं सामान्य रूप से किये ही जाता था; गर्मी में तो सभी थोड़े-बहुत दुबले हो जाते हैं। एक दिन उसने मुझसे कहा कि मैं डॉ. बी.के. मुखर्जी से अपनी परीक्षा कराऊँ। मैंने टालमटूल की तो उसने ब्रह्मास्त्र छोड़ दिया, मैं जब तक अपने को डाक्टर को न दिखलाऊँगा वह खाना नहीं खाएगी। ब्रह्मास्त्र तो मानना ही था। डॉ. मुखर्जी को भय था कि मुझ पर क्षय का आक्रमण हुआ है। नुस्खा उन्होंने लिख दिया और कुछ दिन चिंतामुक्त होकर पूरी तरह आराम करने को कहा। नुस्खा मुझे मौत का परवाना लगा- क्या मेरी बिदा का समय आ गया? - क्या इतने ही दिनों के लिए आया था? इतना ही गाने, गुनगुनाने, केवल इतना श्रम-संघर्ष करने, इतने दु:ख-संकट उठाने?- 'स्वागत के ही साथ विदा की होती देखी तैयारी, बंद लगी होने खुलते ही मेरी जीवन-मधुशाला।' क्या मैंने अपनी भविष्यवाणी स्वयं कर दी थी? सबसे मर्मवेधी प्रश्न था- क्या श्यामा के भाग्य में वैधव्य भी लिखा है?

मरने से मुझे डर नहीं था; वह मुझे कठिन भी नहीं लगा; कठिन लगा मरने के पहले जीना। पूरे आराम के अर्थ होंगे ट्यूशनें छोड़ दूं, स्कूल से छुट्टी ले लूँ- ज्यादा लूं तो बगैर तनख़्वाह के लेने को तैयार हूँ, फिर घर का खर्च कैसे चलेगा, शालिग्राम केवल अपनी तनख़वाह के बल पर घर नहीं चला सकते; कल उनकी बदली हो सकती है, तब वे एक पैसा भी घर भेजने की स्थिति में न होंगे; महँगी-महँगी दवाएँ कहाँ से आएँगी, किताबों से आमदनी अनियमित और अनिश्चित है, क़र्ज भी अदा करने को कम नहीं है।

श्यामा ने मेरी बीमारी सुनी तो काँप उठी, पर तुरत सँभल भी गई, दृढ़ भी हो गई, जैसे उसने पलभर में अनुभव कर लिया कि उसका काँपना मैं सहन नहीं कर सकूँगा।

इस खबर से मेरे माता-पिता को तो लकवा-सा मार गया। पिताजी धैर्यवान् व्यक्ति थे, उन्होंने मुझसे कहा, ''घबराओ नहीं, हम घर बैचकर तुम्हारा इलाज करेंगे।''

शालिग्राम असमर्थता की एक उसाँस लेकर रह गये।

मैंने कुछ दिनों के लिए ट्यूशन और स्कूल से छुट्टी ले ली। किताबों की बिक्री से कुछ रुपये पड़े थे, उनसे दवाएँ मँगा लीं और चारपाई पर लेट गया। श्यामा की सेवा साकार हो गई।

डाक्टर ने निश्चिंत होकर आराम लेने के लिए कहा था। जब बहुत कुछ करने को रहता था चिंता के लिए समय ही कहाँ था, अब तो चिंता ही चिंता करने को थी। विशेष चिंता भी मुझे सिर पर चढ़े क़र्ज की। मेरा इलाज हो या न हो, पर क़र्ज की किस्तें तो जानी ही चाहिए, उसकी नियमित अदायगी के साथ मेरी साख जुड़ी थी, उसका जाना मेरे मरने से पहले ही मेरी मौत होगी।

श्यामा के लिए मैं पारदर्शी दर्पण था। उसने पूछा, ''किसी बात से चिंतित हो? चिंता ही खाती रहेगी तो दवा क्या लाभ पहुँचाएगी?''

मैंने कहा, ''ट्रैक्ट सोसायटी के मुझ पर 400, (क़र्ज हैं, करीब 100) अन्य मित्रों के।''

उसने जो उत्तर दिया उससे मैं चौंक पड़ा और सहसा उठकर उसे घूरकर देखने लगा, जैसे श्यामा को एक बार फिर से पहचानने की जरूरत हो।

उसने कहा था, ''क़र्ज तो मैं तुम्हारे मरने के बाद भी उतार दूँगी। तुम इसकी चिंता छोड़ो।''

मैं सोचने लगा, श्यामा ने वज्र ही अपनी छाती पर रखकर यह वाक्य कहा होगा। मुझे चिंतामुक्त रखने को वह क्या नहीं कर सकती थी।

मरने के लिए जो मैंने अपने आप को छोड़ दिया था, वह मुझे एकदम गलत लगा। मुझे अपने लिए नहीं तो श्यामा के लिए जीने का संघर्ष करना चाहिए। श्यामा के लिए मैंने जीवन में कुछ नहीं किया, कभी करने के योग्य नहीं रहा। अब यदि मैं उसे ऐसी स्थिति में छोड़ जाऊँ कि वह मेरे मरने पर मेरा क़र्ज उतारने की चिंता करे तो मुझ-सा जघन्य अपराधी कौन होगा! नहीं, मैं श्यामा के लिए चिंताएँ नहीं छोड़ जाऊँगा, जीने का रास्ता खोजूँगा, जीकर अपनी चिंताएँ समाप्त करूँगा। एक रात जैसे मेरे कानों में किसी ने कहा, ''एक रास्ता अब भी है।''

पंद्रह दिन के ही इलाज में अपना बटुआ खाली हो गया था। मैं कदापि नहीं चाहता था कि पिताजी घर को हाथ लगाएँ । अपनी वृद्धावस्था में शांति से बैठने को- चाहे उनको भूखे-नंगे ही बैठना पड़े- उन्होंने एक शरणस्थल बनाया था। मैं उससे उन्हें वंचित करने का कारण नहीं बनना चाहता था। पर यह भी नियति का एक व्यंग्य है कि मेरे पिता-माता, दोनों में से किसी को अपनी छत के नीचे अपनी अंतिम श्वासें छोड़ने का योग नहीं बना था- 'ना जाने राम कहाँ लागै माटी।' पर उस समय मैं कैसे जानता।

और एक दिन मुझे वह रास्ता दिखाई दिया, जिस पर अपने बल पर चलकर मैं अपनी चिंताएँ समाप्त कर सकता था। किसी के लिए, विशेषकर श्यामा के लिए, मैं कोई चिंताएँ नहीं छोडूंगा। इस संकल्प ने मुझे दृष्टि भी दी, बल भी दिया।

मैंने डॉ. बी. के. मुखर्जी के पास जाकर कहा, ''डाक्टर साहब, आप का इलाज बहुत महँगा है, मेरे पास आपके इलाज के लिए पैसे नहीं...''

इसके पूर्व कि मैं कुछ और कहूँ या पूछूँ उन्होंने अपने बदनाम मुँहफट स्वभाव से कहा, ''पैसे नहीं है तो जाओ मरो!''

मुझे जीवन में चुनौती से ही बल मिलता है। वे यदि मुझे सौ बरस जीने का आशीर्वाद भी देते तो शायद जीने के लिए संघर्ष करने का मुझमें इतना बल न आता जितना मैंने उनके 'जाओ मरो,' शब्दों से संचय किया।

लड़कपन में मेरे पड़ोसी बाबू मुक्ता प्रसाद ने लुई कूने के पानी के इलाज से मुझे परिचित कराया था। मेरी ऐसी बीमारी के लिए ठंडे पानी के टब में बैठकर 'सिट्ज बाथ' लेने का विधान था। एलोपैथी में क्षय के रोगी को दूध, घी, मक्खन, अण्डा अधिक से अधिक दिया जाता था। कूने के इलाज में चिकना मना था, सिर्फ कच्ची सब्जियाँ, फल, भीगे चने, गेहूँ आदि पर रहना था। न दवा पर कुछ खर्च, न खुराक पर कुछ खर्च- यही इलाज तो मेरी स्थिति के अनुकूल था और काम-काज साधारण किये जाना था। मैंने बी.के. मुखर्जी का नुस्खा फाड़ डाला और कूने के अनुसार सिट्ज बाथ आरंभ किया, तद्नुसार खुराक आदि रखी। स्कूल भी जाने लगा, केवल रातवाली ट्यूशन छोड़ दी। उसका मोआवज़ा एक तरह से किताबों की बिक्री से मिल जाता। श्यामा ने मेरा विरोध न किया। जीवनभर मैं जिस रास्ते पर भी चला उसने 'स्वस्ति पंथा' कहा और मेरे पीछे चली। मेरी स्नान-चिकित्सा के संबंध में भी वह प्रतिदिन अपनी सेवा, सहयोग देती रही, सबसे अधिक अपने इच्छा-बल से उसने मुझे अपने रास्ते पर न ठहरने दिया, न पीछे फिरने दिया- 'राह पकड़ तू एक चलाचल पा जाएगा मधुशाला'। लेकिन अपने अड़िग इच्छा-बल से उसने जो सबसे बड़ा सहयोग दिया और जो सबसे बड़ा चमत्कार किया वह यह था कि जितने दिन मेरा इलाज चलता रहा उसने अपने सारे रोगों को जैसे कील दिया और कभी एक उँगली दु:खने की भी शिकायत

न की। शायद उसके प्रति इस निश्चिंतता ने मुझे अपने रोग से लड़ने का जितना बल दिया उतना किसी चीज ने नहीं। इस आत्म-नियंत्रण, आत्मनिग्रह, इच्छाबल, हठयोग की - समझ में नहीं आता उसे क्या नाम दूँ- बड़ी महँगी क़ीमत उसे चुकानी पड़ी। अपने क्षय-ज्वर से पूर्णतया मुक्त हो जिस दिन मैंने सामान्य भोजन किया- 15 अप्रैल, 1936 को- ठीक उसी दिन वह चारपाई पर गिरी और फिर न उठी; 216 दिन बराबर रोग-शय्या पर पड़े रहने के बाद 17 नवम्बर, 1936 को उसने अपना शरीर छोड़ दिया। श्यामा के और अपने विवाहित जीवन के अंतिम अठारह महीनों में मुझे और उसे, दोनों को मौत के साथ संघर्ष करना पड़ा। मेरे संघर्ष में श्यामा ने अपनी इतनी आंतरिक मंगल कामना दी; इतना सहयोग दिया, इतनी अपनी सेवा दी, इतना अपने को दिया, इतना अपनी ओर से मुझे चिंता-विमुक्त रखा कि मैं उस संघर्ष में विजयी हुआ, पर उसके संघर्ष में बहुत मैंने अपनी शुभकामना दी, बहुत सहयोग दिया, बहुत सेवा दी, बहुत अपने को दिया पर वह पराजित हो गई, संभवत: एक मोर्चे की कमज़ोरी से, वह मेरे विषय में मृत्यु की अंतिम साँसों तक चिंता-विमुक्त नहीं हो सकी।

शब्दार्थ और टिप्पणी

प्लूरिसी दांतों की बीमारी, फेफड़ों में पानी भर जाना **टाल मटुल** टालना **अदायगी** देना, प्रदान करना **नुस्खा** उपाय **आत्मनिग्रह** आत्मा पर अंकुश **एलोपैथी** अंग्रेजी पद्धति की अचार पद्धति **नेचरोपथी** प्राकृतिक उपचार पद्धति

स्वाध्याय

1. एक-एक वाक्य में उत्तर दीजिए :

(1) सामान्यत: लेखक कौ कौन-कोन सी बीमारियाँ रहती थीं?

(2) लेखक एलोपैथी का उपचार क्यों नहीं कराते थे?

(3) बच्चनजी को मुक्ता प्रसादजी ने कौन सा उपचार बताया था?

2. सविस्तर उत्तर दीजिए :

(1) लेखक बीमारी में भी क्यों काम करते थे?

(2) लेखक की बीमारी सुनकर श्यामा काँपकर तुरंत क्यों संभल गई?

(3) लेखक को ऐसा क्यों लगा की उन्हें श्यामा के लिए जीने का संघर्ष करना चाहिए?

(4) बच्चनजी की पारिवारिक आर्थिक विपन्नता के बारे में अपने विचार प्रकट कीजिए।

3. नीचे दीये गये वाक्यों का भावार्थ समझाइए :

(1) 'बीमारी अमीरों की हरमजदगी है, गरीबों को उसे अपने पीछे न लगाना चाहिए।'

(2) 'काम के पीछे बुखार भागे।'

4. शब्दसमूह के लिए एक-एक शब्द दीजिए :

(1) जहाँ शरण लिया जा सके

(2) सौ-बरस जीने का आशीर्वाद

(3) शुभ मार्ग पर चलने का आशीर्वाद

5. विरोधी शब्द दीजिए :

चिकना, मधु, कलश, विमुक्त

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- बीमारी का इलाज करते बच्चन का शब्दचित्र प्रस्तुत कीजिए ।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- हरिवंशराय बच्चन की प्रख्यात रचना 'मधुशाला' का कैसेट बच्चों को सुनाइये।
  हरिवंशराय बच्चन की आत्मकथा का एक अंश कैसेट द्वारा सुनाइये।

7 सूरदास के पद

सूरदास

(जन्म : सन् 1478 ई. : निधन : सन् 1573 ई.)

महाकवि सूरदासजी का जन्म कुछ लोगों के मतानुसार दिल्ली के पास सीही नामक गाँव में हुआ था। कई लोगों का मानना है कि इनका जन्म मथुरा के पास रुकना या रेणुका क्षेत्र में हुआ था। इनका जन्मांध होना भी विवादास्पद है। वल्लभाचार्य इनके गुरु थे। इनकी प्रेरणा से वे श्रीनाथजी मंदिर में कृष्ण की लीलाओं से संबंधित पदों की रचना करते थे। ये कृष्ण के अनन्य भक्त थे।

वात्सल्य एवं शृंगार रस के वर्णन में वे अद्वितीय हैं। प्रस्तुत पद में सूरदास की अनन्य भक्ति-भावना का परिचय मिलता है। उनका मन सिवाय कृष्ण के कहीं ओर सुख नहीं पाता। जिन आँखों ने कमल के समान नयनवाले श्रीकृष्ण का दर्शन कर लिया हो वे ओर देव की आराधना कैसे कर सकती हैं? आराध्य देव का गुणगान सूरने किया है। दूसरे पद में भी कृष्ण का मनमोहक वर्णन किया है। बालकृष्ण की चेष्टाओं के माध्यम से बालक कृष्ण का मनोरम्य वर्णन किया है।

विनय तथा भक्ति

(1)

मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै।
जैसे उड़ि जहाज को पंछी, फिरि जहाज पर आवै।
कमल-नैन कौ छाँड़ि महातम, और देव को ध्यावै।
परम गंगा कौं छाँड़ि, पियासौ, दुरमति कूप खनावै।
जिहिँ मधुकर अंबुज-रस चाख्यौ, क्यों करील-फल भावै।
सूरदास-प्रभु कामधेनु तजि, छेरी कौन दुहावै।

(2)

सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरूनि चलन रेनु तन-मंडित, मुख दधि लेप किये।
चारू कपोल, लोल लोचन, गोरोचन-तिलक दिये।
लट-लटकनि मनु मत्त मधुप-गन मादक मधुहिँ पिए।
कठुला-कंठ, बज्र केहरि-नख, राजत रूचिर हिए।
धन्य सूर एकौ पल इहिं सुख, का सत कल्प जिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

अनत दूसरे स्थान पर, अन्यत्र **पंछी** पक्षी, विहग **महातम** महानता, माहात्म्य **ध्यावै** ध्यान करे **छाँड़ि** छोड़कर **पियासौ** प्यासा **दूरमति** खराब बुद्धिवाला **करीला** कंटीली झाड़ी **छेरी** बकरी **चारु** सुंदर **लोचन** आँख **मादक** नशायुक्त

स्वाध्याय

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :**
   (1) जहाज का पंछी जहाज से उड़कर फिर कहाँ आता है?
   (2) सूरदास के मधुकर को करील फल क्यों नहीं भाता?
   (3) बालकृष्ण के मुख पर किसका लेप किया हुआ है?
   (4) सूर धन्य क्यों हुए?

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए :**

(1) सूर ने किन उदाहरणों द्वारा अपनी अनन्य भक्ति भावना प्रकट की है ?

(2) बालक कृष्ण के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

(3) सूरदास अपने आपको क्यों धन्य मानते हैं ?

3. **तत्सम रूप दीजिए :**

अनत, पंछी, महातम, पियासौ, दुरमति, लट, मधुहिँ, केहरि

4. **समानार्थी शब्द लिखें :**

पक्षी, अंबुज, कूप, मधुकर, धेनु, छेरी, नवनीत, लोचन, कंठ, नख

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- चलचित्रों में पाए जानेवाले सूरदासजी के पदों का संग्रह कीजिए ।
- सूरदास के जीवन और साहित्य सर्जन के बारे में विशेष जानकारी प्राप्त कीजिए।

शिक्षक-प्रवृत्ति

- सूरदास के चित्र प्राप्त करें तथा छात्रों से उनके जीवन और कथन के चार्ट्स करवाइए।
- मल्टीमिड़िया के उपयोग द्वारा सूरदास के पद की सी.डी. बनवाइए।

●